संत श्री आसारामजी बापू द्वारा प्रेरित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ अक्टूबर २००९
वर्ष : १९ अंक : ४
(निरंतर अंक : २०२)

नूतन दिवाली आयी है,
दीपक जला लो ज्ञान का ।
कूड़ा निकालो हृदय से,
मद-मोह-मत्सर-काम का ।।

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

विभिन्न संत श्री आसारामजी आश्रमों में सामूहिक श्राद्ध का आयोजन

अमदावाद (गुज.)

उल्हासनगर (महा.)

मोटी बांडीबार, जि. दाहोद (गुज.)

रजोकरी (दिल्ली)

भैरवी (गुज.)

वापी (गुज.)

भावनगर (गुज.)

बड़ौदा (गुज.)
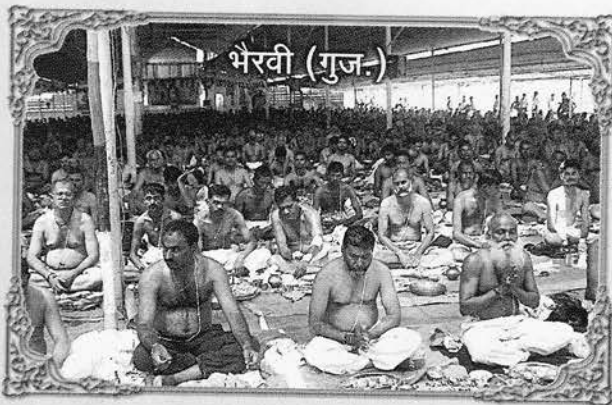
ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, अंग्रेजी एवं सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : ४
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०२)
१ अक्टूबर २००९ मूल्य : रु. ६-००
आश्विन-कार्तिक वि.सं. २०६६

स्वामी : महिला उत्थान ट्रस्ट
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : महिला उत्थान ट्रस्ट, यू-१४, स्वस्तिक प्लाजा, नवरंगपुरा, सरदार पटेल पुतले के पास, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक	: रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक	: रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक	: रु. २२५/-
(४) आजीवन	: रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में

(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक	: रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक	: रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक	: रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक	: US $ 20
(२) द्विवार्षिक	: US $ 40
(३) पंचवार्षिक	: US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

संपर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०, २७५०५०११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

इस अंक में...

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट (अमदावाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

रोज सुबह ७-५० बजे (सोमवार से शुक्रवार)

रोज सुबह ७-३० बजे

MATV (यूरोप) दोपहर १२-३० बजे (बुधवार व शनिवार)

रोज सुबह ६.१० बजे

रोज सुबह ७-०० बजे

आध्यात्मिक क्रांति के प्रणेता

वे कौन हैं जिन्होंने शास्त्रों के गूढ़ ज्ञान को सरल, रसमय बनाकर पूरे विश्व को अध्यात्म-ज्ञान से आलोकित किया है ? वे कौन हैं जिन्होंने केवल भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व को अपनी अमृतमयी वाणी से परितृप्त कर दिया है ? वे कौन हैं जिन्होंने पहली बार पूरे विश्व में 'सत्संग' के साथ 'सत्सेवा' का भी पावन आदर्श प्रस्तुत किया है ?

हम जानते हैं आपके मुख पर ये ही शब्द होंगे : आत्मारामी, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, योगिराज प्रातःस्मरणीय परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू।

समस्त विश्व में फैले पूज्यश्री के करोड़ों भक्तों द्वारा २० सितम्बर को आपश्री का आत्मसाक्षात्कार-दिवस मनाया गया। मानव-जीवन के लिए परम प्रेरक इस पावन अवसर पर अनेकों भक्तों की भावनाओं का आदर करते हुए यह **'आत्मसाक्षात्कार विशेषांक'** प्रकाशित किया गया है। इसका एक-एक पृष्ठ एक-एक पुष्प है जो परम पूजनीय महाराजश्री के श्रीचरणों में भक्तों की ओर से सादर समर्पित है। वास्तव में आत्मस्वरूप से सर्वव्याप्त आप जैसे पूर्ण महापुरुष की महानता का वर्णन करने हेतु कलम उठाना सूरज को दीया दिखाने जैसा है क्योंकि महाराजश्री की महानता का वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं है।

जैसे पृथ्वी पर प्रकाश के स्रोत सूर्यनारायण हैं वैसे समाज में सत्प्रेरणा, सद्भाव, सत्प्रवृत्तियों के मूल स्रोत ब्रह्मनिष्ठ संत-महापुरुष होते हैं। फूल खिलते कहीं हैं पर महक चारों दिशाओं में फैल जाती है, वैसे ही महापुरुषों की सद्गुण-सुवास से सारा संसार महक उठता है। पूज्य बापूजी के सद्गुरु भगवत्पाद श्री श्री लीलाशाहजी महाराज ने पूज्य बापूजी को सम्बोधित कर कहा था : **''तू गुलाब होकर महक... तुझे जमाना जाने।''**

कुलगुरु परशुरामजी ने भी आपके तेजस्वी मुखमंडल को देखकर भविष्यवाणी की थी : **''यह तो महान संत बनेगा, लोगों का उद्धार करेगा।''**

उनके आशीर्वचन आज प्रकट रूप धारण कर चुके हैं। पूज्य बापूजी आज एक पूर्ण विकसित गुलाब की तरह महक रहे हैं, जिनकी पावन आत्मसुवास से विश्व के करोड़ों मुरझाये दिल खिल रहे हैं। आपश्री की वाणी में वैदिक ऋषियों का ज्ञान मुखरित हो रहा है। प्राणिमात्र की पीड़ा जिनको अपनी पीड़ा लगती है, परदुःखकातरता जिनका सहज स्वभाव है, ऐसे जीवमात्र के हितैषी लोकसंत पूज्य बापूजी आज समूची मानवता को जीवन की सही राह दिखा रहे हैं।
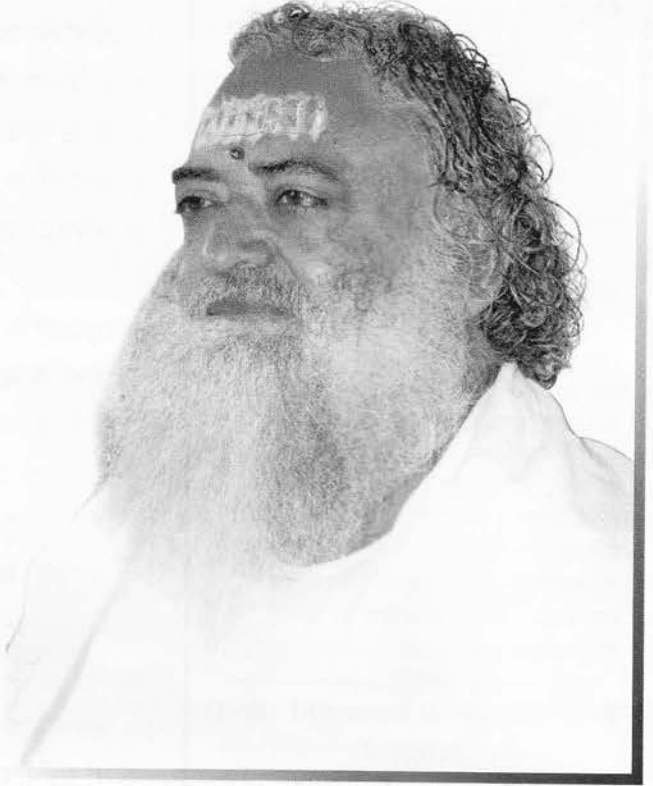
भगवत्स्वरूप महापुरुषों को यद्यपि किसी कर्तव्य का बंधन नहीं होता क्योंकि वे सभी बंधनों से परे परमात्मपद में प्रतिष्ठित होते हैं, फिर भी उनके द्वारा जो सहज कर्म होते हैं उनसे समाज का बहुत-बहुत मंगल होता है। ब्रह्मनिष्ठा के मूर्तिमंत स्वरूप, लोकसेवा के आदर्श, प्राणिमात्र के परम सुहृद, कुंडलिनी योग के समर्थ आचार्य पूज्य बापूजी अपने सत्संग-प्रवचनों के माध्यम से लोगों में प्राणिमात्र के हित की भावना जगाकर भारतीय संस्कृति के प्रति जागृति की लहर फैला रहे हैं।

'सर्वभूतहिते रतः' पूज्य बापूजी कहते हैं : **'मुस्कराना मेरी आदत है, प्रसन्न रहना मेरा स्वभाव है और तुम्हें जगाना मेरा उद्देश्य है।'**

स्वस्थ, सुखी, सम्मानित एवं प्रभुरस से पूर्ण जीवन का प्रसाद बाँटते हैं पूज्य बापूजी । आपकी वाणी में सहजता, सरसता और अपनत्व की ऐसी मिठास मिलती

''परम पूज्य बापूजी ब्रह्मस्वरूप संत हैं। उनके दर्शनमात्र से जीवन में उन्नति हो जाती है।'' **- कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी**

है जो बहुत ही दुर्लभ है। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना आपके प्रत्येक व्यवहार में अभिव्यक्त होती है। सभी लोग ईर्ष्या-द्वेष छोड़कर परस्पर प्रेमभाव से रहते हुए एक आदर्श समाज का निर्माण करें, जिससे भारत विश्वगुरु पद पर शीघ्र ही आसीन हो, यह आपका संदेश है।

आपकी महानता को शब्दों में अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हुए महामंडलेश्वर श्री परमात्मानंदजी महाराज कहते हैं : ''युगपुरुष, युगावतार, पूज्यचरण, प्रातःस्मरणीय, अनंतश्री विभूषित परम संत आसारामजी महाराज के रूप में आज हमारे बुद्ध मिल गये हमें, हमारे गुरु नानकजी हमें मिले हुए हैं, हमारे सूरदासजी हमें मिले हुए हैं, हमारे तुलसीदासजी बापूजी के रूप में बैठे हैं। आज इनका सम्मान तुलसीदासजी का सम्मान है, कबीर साहब का सम्मान है, महात्मा बुद्ध का सम्मान है।''

आपश्री में भगवान श्रीराम की कर्म-कुशलता, भगवान श्रीकृष्ण की भक्तवत्सलता एवं समता, स्वामी लीलाशाहजी व ज्ञानेश्वरजी महाराज का योगसामर्थ्य, महात्मा बुद्ध की करुणा, महावीर स्वामी की तपस्या, हनुमानजी की सेवानिष्ठा, गुरु नानकदेवजी की साधननिष्ठा, स्वामी रामतीर्थ की वेदांतिक मस्ती, चैतन्य महाप्रभु का संकीर्तन-प्रेम एवं श्री रमण महर्षि की ज्ञाननिष्ठा का छलकता दरिया पाकर भक्तजन निहाल हो जाते हैं।

कुंभ महापर्वों पर आपके सत्संग-सान्निध्य में ज्ञान-ध्यान की गहराइयों में मस्त लाखों-लाखों लोगों का जनसैलाब देखकर कुंभ में आये लोगों को एहसास होता है मानों इस पर्व की सम्पूर्ण महिमा एक ही स्थान पर देखने को मिली हो।

सभीको पूज्यश्री अपने लगते हैं। विभिन्न संगठनों के मुखिया एवं अधिकतर पार्टियों के राजनेता आपसे मार्गदर्शन प्राप्त कर धन्यता का अनुभव करते हैं। आपने अमेरिका, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, कनाडा, इंग्लैंड, हांगकांग, सिंगापुर, तैवान, बैंकाक, इंडोनेशिया, दुबई सहित पाकिस्तान में भी जाकर सुख, शांति, आपसी सौहार्द का संदेश दिया है।

आपश्री ने सितम्बर १९९३ में 'विश्व धर्म संसद' में भारत का सफल प्रतिनिधित्व किया था। वक्तव्य हेतु जहाँ अन्य सभी वक्ताओं को ३ से ५ मिनट का समय दिया गया था, वहीं आपश्री का पावन प्रवचन सब लोग एक बार ५५ मिनट तक व दूसरी बार सवा घंटे तक मंत्रमुग्ध हो सुनते ही रहे। आपके सत्संग में ऋषि-ज्ञान और आधुनिक जीवन दोनों में युग-अनुरूप तालमेल बैठाने की उत्तम युक्ति मिलती है।

आप कहते हैं : ''आध्यात्मिकता के बिना नैतिकता टिक नहीं सकती और भौतिकता दुःख दिये बिना रह नहीं सकती। हम भलाई नहीं कर सकें तो कोई बात नहीं लेकिन बुराईरहित जरूर हो जायें। राग-द्वेष, लोभ-मोह से प्रेरित होकर नहीं, प्रभुप्रेम से प्रेरित होके कर्म करें। विश्वशांति का डंका पीटने से वह उपलब्धि नहीं होगी जो स्वयं आत्मशांति में सराबोर होने से होगी। आध्यात्मिकता के बिना सच्ची उन्नति और सच्चा सुख सम्भव ही नहीं है। भौतिक उन्नति हर्ष देगी, सुविधा देगी किंतु सुख नहीं दे सकती। इसलिए आध्यात्मिक उन्नति को महत्त्व दें ताकि सभी प्रकार की उन्नति सरलता से हो सके।''

अपने सत्संगों में आप बीजमंत्र ॐकार सहित हास्य-प्रयोग कराते हैं, जिससे ७०,००० बोविस ऊर्जा उत्पन्न होती है। इससे एक ओर वातावरण का वैचारिक प्रदूषण दूर होता है तो दूसरी ओर भक्तों की तीव्र गति से आध्यात्मिक उन्नति होती है।

आपके सत्संग में ध्यानयोग की गहराई, भक्तियोग का माधुर्य और ज्ञानयोग की तत्त्वनिष्ठा का सुंदर सम्मिश्रण होता है; साथ ही आपके जीवन में कर्मयोग भी पूरी तरह निखरा है। आपकी सत्प्रेरणा से चल रहे अनेकानेक सेवा-प्रकल्पों के माध्यम से आज समाज लाभान्वित हो रहा है। अधिकांश आश्रमों में आपके द्वारा शक्तिपात किये हुए बड़ या पीपल के वृक्ष हैं, जिनकी प्रदक्षिणा या प्रार्थना से शांति तो मिलती ही है, असंख्य लोगों की मनौतियाँ भी फली हैं, फलती हैं।

आपसे प्राप्त वैदिक मंत्रों की दीक्षा साधकों के जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन ला देती है। उनका शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक बहुआयामी उत्थान होता है तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के लाभ उनके जीवन में सुस्पष्ट देखने को मिलते हैं। (उनमें से प्रमुख लाभों का विवरण 'ऋषि प्रसाद' के आगामी अंकों में प्रकाशित किया जायेगा।) मंत्रदीक्षा के सारे लाभों का वर्णन कर पाना असम्भव है। पूज्यश्री से दीक्षित साधक-भक्तों के स्वयं प्रेषित कुछ उद्गार भी इस अंक में प्रकाशित किये जा रहे हैं, जो पठनीय हैं।

अकारण करुणा-वरुणालय

पूज्य बापूजी बताते हैं कि साधनाकाल में आप भगवत्प्राप्ति के लिए खूब तड़पते थे और मन-ही-मन अपने परमात्मा से कहते कि ''तू एक बार अपना अनुभव होने दे, फिर देख मैं तुझे कितना सस्ता (आसान) बना देता हूँ।''

आज पूज्यश्री के ये वचन पूर्णतः यथार्थ सिद्ध हो रहे हैं। करुणा-वरुणालय आपके यहाँ मत, पंथ, नात-जात आदि किसी भी भेदभाव के बिना सभी लोगों के लिए आत्मानंद का पावन सिंधु सदैव लहरा रहा है।

आपके परम करुणापूर्ण वचन मरुभूमि के समान वीरान जीवन में भी नयी उमंग का झरना बहाते हैं। आप विश्वासपूर्वक कहते हैं : **''हजार-हजार बार असफल होने पर भी एक कदम और सत्पथ में उठाओ... विजयश्री तुम्हारे कदमों को चूमकर ही रहेगी !''**

कलियुग के चंचल, प्रदूषित वातावरण में पूज्यश्री ने गीताज्ञान की ऐसी पावन गंगा बहायी है जहाँ अधिकारी-अनधिकारी का भेद किये बिना ही सभीको पावन होने का समान अवसर दिया जाता है।

पूज्यश्री ने साधनाकाल में तितिक्षाएँ एवं कसौटियाँ सहकर त्याग-तपस्या करके जो आत्म-अमृत प्राप्त किया, आज उसे आप स्वयं सतत भ्रमण करते हुए जन-जन में लुटा रहे हैं। आपके हजारों साधक ऐसे हैं जिन्होंने हर पूर्णिमा को आपके दर्शन करके ही अन्न-जल लेने का व्रत लिया है। उन्हें दूर तक की यात्रा न करनी पड़े इसलिए आप स्वयं शारीरिक परिश्रम सहन कर एक ही दिन दो-दो, तीन-तीन स्थानों पर पूर्णिमा दर्शन-सत्संग देते हैं। आप एकांत में रहते हैं तो वहाँ भी दर्शन-सत्संग के लिए भक्तजन पहुँच ही जाते हैं। ऐसे में अपने एकांत के अमूल्य समय में से भी कुछ समय निकालकर आपश्री उन्हें सत्संग-ध्यान आदि से परितृप्त करते हैं।

सचमुच गुरु हैं दीनदयाल,
सहज ही कर देते हैं निहाल।
वे चाहते सब झोली भर लें,
निज आत्मा का दर्शन कर लें ॥

कहीं आते-जाते पूज्य बापूजी को रास्ते में कोई गरीब व्यक्ति दिख जाता है तो कोई परिचय न होने पर भी पूज्यश्री के लिए कोई अपरिचित नहीं होता। दयानिधि, अकारण करुणा-वरुणालय पूज्य बापूजी गाड़ी रोककर उसे रुपये, प्रसाद तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ दे देते हैं। जब आप नंगे सिर, नंगे पैर धूप में जाते हुए किसी अभावग्रस्त व्यक्ति को देखते हैं तो आपका करुणासिंधु हृदय इतना द्रवित होता है कि आप उसे अपनी चप्पल, छाता व कंधे पर ओढ़ी धोती तक दे देते हैं, और देते हैं ऐसी मधुर मुस्कान जिसे वह जीवन भर नहीं भूल पाता।

आत्मसाक्षात्कार

धरती पर तो रोज करीब डेढ़ करोड़ लोगों का जन्मदिवस होता है। शादी-दिवस और प्रमोशन-दिवस भी लाखों लोगों का हो सकता है। शपथ-दिवस भी कई नेताओं का हो सकता है। ईश्वर के दर्शन का दिवस भी दर्जनों भक्तों का हो सकता है लेकिन ईश्वर-साक्षात्कार दिवस तो कभी-कभी और कहीं-कहीं किसी-किसी विरले का देखने को मिलता है।

हे मनुष्य ! तू भी उस सत्स्वरूप परमात्मा के साक्षात्कार का लक्ष्य बना। वह कोई कठिन नहीं है, बस उससे प्रीति हो जाय।

प्राणिमात्र के आत्मा

पूज्य बापूजी मनुष्यमात्र के हित के लिए, स्वास्थ्य व सुख-शांति के लिए, तनावरहित जीवन व पारिवारिक सौहार्द के लिए तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए तो रत रहते ही हैं, परंतु छोटे-से-छोटे जीव-जंतुओं को भी कष्ट न हो, उनका भी जीवन जीने का अधिकार बरकरार रहे इस बात का भी पूरा ख्याल रखते हैं। आप अपने शिष्यों को भी यही शिक्षा देते हैं कि चलते समय चींटी आदि जीवों का ख्याल रखते हुए सावधानी से चलो, पक्षियों के लिए दाना डालो, गायों को ग्रास दो - प्राणिमात्र के प्रति दयापूर्ण... नहीं-नहीं आत्मवत् व्यवहार करो। यही शिक्षा देते हुए आप अपने सत्संग में कहा करते हैं : **आत्मवत् पश्येत् सर्वभूतेषु।**

प्राणिमात्र के मंगल में रत आपश्री ने कत्लखाने ले जायी जा रहीं हजारों गायों को जीवनदान दिया और विशाल गौशालाएँ खोलकर उनके पालन-पोषण की व्यवस्था की। इस प्रकार आपने जीवदया के साथ-साथ देशवासियों को गौ-पालन का जो महान संदेश दिया है, उसके लिए भारतवर्ष आपका सदैव ऋणी रहेगा।

प्राणिमात्र के परम हितैषी ब्रह्मज्ञानी महापुरुष आत्मस्वरूप से सबमें स्थित होते हैं। पूज्यश्री की यह **'अहं आत्मा सर्वभूताशयस्थितः'** की उदात्त भावना साधनाकाल से ही अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची हुई है। इस बात की परिचायक हैं पूज्यश्री के साधनाकाल की वे घड़ियाँ, जब पूज्यश्री का चरण कभी अँधेरी गुफा में साँप आदि किसी जहरीले जीव-जंतु से स्पर्श कर जाता तो भी वे आपको काटते नहीं थे।
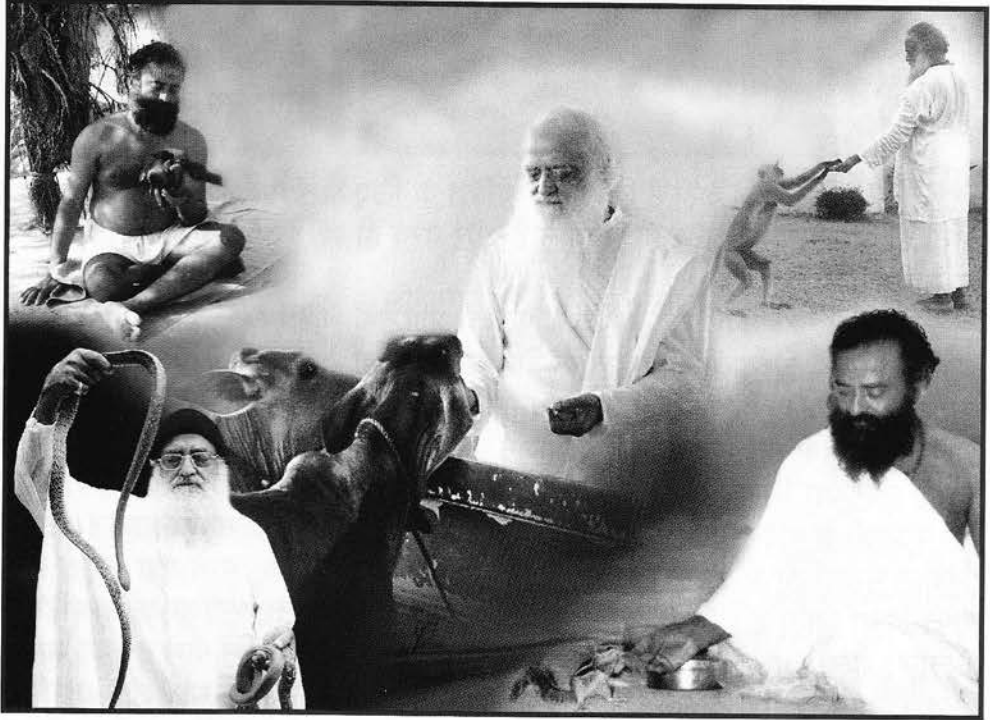
योग-सामर्थ्य के धनी

ब्रह्मनिष्ठा अपने-आप में एक बहुत बड़ी ऊँचाई है। ब्रह्मनिष्ठा के साथ यदि योग-सामर्थ्य भी हो तो दुग्ध-शर्करा योग की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसा ही सुमेल देखने को मिलता है परम पूज्य बापूजी के जीवन में। एक ओर जहाँ आपकी ब्रह्मनिष्ठा साधकों को सान्निध्यमात्र से परम आनंद, पवित्र शांति में सराबोर कर देती है, वहीं दूसरी ओर आपकी करुणा-कृपा से मृत गाय को जीवनदान मिलना, अकालग्रस्त स्थानों में वर्षा होना, वर्षों से निःसंतान रहे दम्पतियों को संतान होना, रोगियों के असाध्य रोग सहज में दूर होना, निर्धनों को धन प्राप्त होना, अविद्वानों को विद्वत्ता प्राप्त होना, घोर नास्तिकों के जीवन में आस्तिकता का संचार होना - इस प्रकार की अनेकानेक घटनाएँ आपके योग-सामर्थ्य सम्पन्न होने का प्रमाण हैं।

अनाथों के नाथ
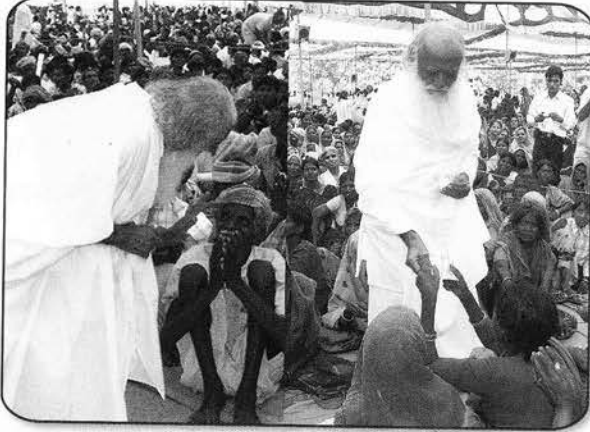
किन्हीं महापुरुष ने कहा है कि **'भूखे व्यक्ति के लिए रोटी ही अध्यात्म है, अन्न ही भगवान है और वस्त्र ही परमात्मा है।'**

सत्य ही है, जब तक गरीब व्यक्ति के पेट की आग नहीं बुझती तब तक अध्यात्म की महानतम बात भी उसे नहीं सुहाती। समाज के हर स्तर को उन्नत बनाने में रत पूज्य बापूजी ने गरीबों हेतु भजन के साथ भोजन की व्यवस्था करके उपरोक्त सिद्धांत को भली-प्रकार चरितार्थ किया है। पूज्यश्री के पावन मार्गदर्शन में गरीबों, आदिवासियों में विशाल भंडारों का आयोजन करके उन्हें भोजन-प्रसाद से तृप्त किया जाता है। तत्पश्चात् सभीको कपड़े, बर्तन, अनाज, तेल, साबुन, आँवला चूर्ण पैकेट, च्यवनप्राश, मिठाई, चप्पल आदि दैनिक जीवन में उपयोगी विभिन्न सामग्रियों के साथ नकद आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है। फिर उन्हें पिलाया जाता है हरिनाम का अमृत ! कीर्तन में आनंदविभोर हो झूमते हुए उन भगवान के प्यारों को हास्य-प्रयोग द्वारा प्रसन्नता का प्रसाद भी दिया जाता है। यह अनोखा तरीका उनके जीवन की नीरसता को सरसता में बदल देता है। फिर पूज्यश्री उन्हें स्वस्थ, सुखमय जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

आप उन्हें समझाते हैं : ''आदिवासियों में चाँदी के कड़े, चाँदी की अँगूठी पहनने की कुप्रथा चल पड़ी है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। सोने के आभूषण नाभि से ऊपर व चाँदी के आभूषण नाभि से नीचे पहनने चाहिए। इसके विपरीत करनेवालों को शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ होती हैं और इसके अनुरूप आभूषण पहननेवालों को स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त होता है।''

रुदन को गीत में बदलने की कला, मौत को मुक्ति में बदलने की कला, वैर को प्रीत में और हार को जीत में बदलने की कला सिखानेवाले इन सद्गुरु ने पर्व के दिन पूर्वजों को याद करके सिर-छाती पीटकर रुदन मचाने की आदिवासियों की उस हानिकारक प्रथा को भी हटाकर पूर्वजों के प्रति सद्भाव व्यक्त करते हुए उनकी मृत्यु को भी मंगलमय बनाने की कुंजी दी। मौत को मोक्ष में बदलने की कला सिखानेवाली पूज्य बापूजी के सत्संग की पुस्तक **'मंगलमय जीवन-मृत्यु'** हर घर में होनी ही चाहिए।

इन भंडारों का लाभ अब तक लाखों पिछड़े लोग ले चुके हैं। भंडारों के अलावा कहीं हलुआ (शीरा), कहीं मिठाई, कहीं फल, कहीं शर्बत, कहीं छाछ तो कहीं छाता आदि का वितरण किया जाता है। आदिवासी अपने प्यारे इन बाबाजी को अपनी भाषा में विभिन्न सम्बोधनों से पुकारते हैं, जैसे - 'शीरावाले बाबा', 'छाछवाले बाबा' आदि। पूज्यश्री के स्वयं ही इन सेवाकार्यों में सहभागी होने से आपके शिष्यों को गरीबों की सेवा में बढ़चढ़कर भाग लेने की प्रेरणा मिलती है। आपका कहना है : **''अपने जीवन को उत्सव बनाइये। उत्सव... 'उत्' माने उत्कृष्ट और 'सव' माने यज्ञ। भूखे को अन्न देना, प्यासे को पानी देना, भूले हुए को राह दिखाना, हारे हुए को हिम्मत देना, कुसंग में फँसे हुए को सत्संग में ले जाना – ये सभी कर्म 'उत्कृष्ट यज्ञ' हैं। आप किसी गरीब को भोजन कराते हो तो उसकी तो पेट की भूख मिटेगी लेकिन आपको आत्मसंतोष मिलेगा, आपकी आत्मोन्नति होगी।''**

पूज्यश्री अपने शिष्यों को यह भी शिक्षा देते हैं कि

गरीबों और पिछड़ों को ऊपर उठाने के कार्य परम पूज्य बापूजी एवं उनके आश्रम द्वारा चलाये जा रहे हैं, मुझे प्रसन्नता है। मानव-कल्याण के लिए किये जा रहे विभिन्न प्रयास समाज की उन्नति के लिए सराहनीय हैं। - **डॉ. ए.पी.जे. अबदुल कलाम, तत्कालीन राष्ट्रपति**
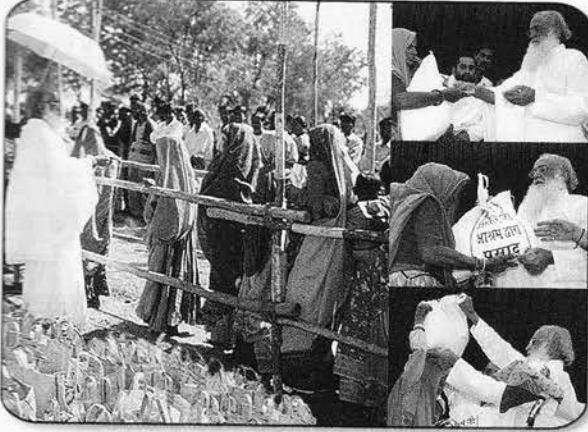
''किसीको कुछ बाँटकर हम किसी पर कोई उपकार नहीं कर रहे हैं, अपितु लेनेवाला हमें सेवा का अवसर देकर हम पर ही उपकार कर रहा है, ऐसा भाव हमारे मन में होना चाहिए। वास्तव में लेनेवालों के रूप में भी प्रभु और देनेवालों के दिल में देने की प्रेरणा देनेवाले भी प्रभु ही हैं!''

महँगाई, गरीबी, बेरोजगारी ये आज के युग की ज्वलंत समस्याएँ हैं, जिनके ताप से झुलसकर समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग अत्यंत अभावग्रस्त जीवन जी रहा है। ऐसे लोगों के लिए पूज्यश्री की परम हितकारी आध्यात्मिक सोच का परिणाम है - 'भजन करो, भोजन करो, रोजी पाओ' योजना। पिछले अनेक वर्षों से चल रही इस योजना में गरीब, बेरोजगार, अभावग्रस्त लोग आश्रम या नियोजित स्थल पर आते हैं और सुबह से शाम तक जप, कीर्तन, सत्संग, स्वाध्याय आदि का लाभ लेते हैं। उन्हें दोपहर का भोजन निःशुल्क दिया जाता है, साथ ही शाम को ३० रुपये रोजी भी दी जाती है। इससे गरीबी, बेरोजगारी घटती है, साथ ही जप-कीर्तन से व्यक्तिगत जीवन में उन्नति व वातावरण की शुद्धि भी होती है।

भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों के समय पूज्यश्री यथासम्भव स्वयं असरग्रस्त क्षेत्रों में पहुँच जाते हैं और पीड़ितों को मदद का हाथ देते हैं, सांत्वना देते हैं व ढाढ़स बँधाते हैं। अन्य स्थानों पर अपने शिष्यों को भेजकर वहाँ के लोगों में भी जीवनोपयोगी सामग्री वितरित करवाते हैं। प्राकृतिक प्रकोपों से पीड़ित लोगों तथा गरीबों-आदिवासियों में निःशुल्क मकानों का भी वितरण किया जाता है।

दीपावली जैसे पर्वों पर एक ओर जहाँ सभी लोग अपने-अपने परिवार और मित्रों के साथ दीपावली मनाने में मशगूल रहते हैं, वहीं दूसरी ओर ये लोकसंत गरीबों-आदिवासियों के बीच जाकर उनके मुरझाये चेहरों पर दीपावली के दीपकों की रौनक देखना चाहते हैं। संतश्री उनके अभावों की पूर्ति कर उनके जीवन में ऐसा उजाला भर देते हैं कि वे बोल उठते हैं :

'दिवाली आये तो बापू, बापू आये तो दिवाली !'

बड़े-बड़े लोग भी जिनके दर्शन के लिए तरसते रहते हैं, कतारों में लगते हैं, वे ही महाराजश्री जब एक-एक अति साधारण अनाथ व्यक्ति से मिलकर उसकी व्यथा पूछने लगते हैं, तब एक अनोखा दृश्य सर्जित होता है। पूज्य बापूजी देशवासियों को संदेश देते हैं कि ''भारत के अनेक लोग पीड़ाग्रस्त हैं, हम उनका ध्यान रखें। देखिये, मंदिर तो बनने चाहिए लेकिन गरीबों के लिए कुछ मकान भी बनने चाहिए, आरोग्य केन्द्र भी बनने चाहिए, उन्हें कपड़े भी मिलने चाहिए।

आप दीपावली के दिन अपने घर में दीये जलाओ लेकिन साथ में किसी गरीब के घर में भी दीया जला आओ। वहाँ भी कुछ मिठाई, फल, कपड़े बाँटके आओ, उनसे स्नेह के दो वचन कहो और **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** के वैदिक ज्ञान-प्रकाश से जीवन को जगमगाओ।''

केवल धन से गरीब व्यक्ति ही गरीब नहीं होता बल्कि सच्ची सुख-शांति से वंचित रहनेवाला भी गरीब ही है। शायद इसीलिए कहा गया है : **'नानक ! दुखिया सब संसार।'** राग-द्वेष, ईर्ष्या, लोभ, स्वार्थ, निंदा ये इस युग

अनाथों के नाथ

के सबसे खतरनाक जहर हैं, जिन्हें पीकर अनेक लोग छटपटा रहे हैं। ऐसे लोगों को भी जब पूज्य बापूजी गुरुरूप में मिल जाते हैं तो उनके जीवन में राग-द्वेष व ईर्ष्या की जगह प्रेम, लोभ की जगह त्याग, स्वार्थ व निंदा की जगह परहित का भाव ले लेता है और उन्हें 'स्व' स्वरूप में जागकर मुक्त होने की युक्ति मिल जाती है।

दीनवत्सल पूज्यश्री के मार्गदर्शन में आश्रम व आश्रम की समितियों द्वारा अन्य अनेक सेवाकार्य चलाये जा रहे हैं, जैसे - अनाथालयों में जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण, गरीबों, अनाश्रितों व विधवाओं के लिए निःशुल्क राशनकार्डों द्वारा अन्न-वितरण, सार्वजनिक स्थलों पर शीतल छाछ व जल का निःशुल्क वितरण, अस्पतालों में फल, दूध, दवाएँ व सत्साहित्य का वितरण, व्यसनमुक्ति अभियान, निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन, चल-चिकित्सालय, जेलों में कैदी उत्थान-कार्यक्रम आदि।

पूज्यश्री की प्रेरणा से चलायी जा रहीं इन सेवा-प्रवृत्तियों से अभिभूत वि.हि.प. के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंघलजी कहते हैं : ''परम पूज्य बापूजी ने आदिवासी, वनवासी समाज के लोगों को भी अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठावान बनाने का जो महान कार्य किया है, उसके लिए पूरा हिन्दू समाज उनका ऋणी रहेगा और कभी उस ऋण को चुका नहीं पायेगा। ऐसे महान व्यक्तित्व ने अनेक प्रकार के सेवाकार्य वनवासी क्षेत्रों में खड़े किये, यह जिनके लिए बर्दाश्त से बाहर की चीज थी उन्होंने ही मीडिया के माध्यम से महाराजजी को ऐसे बदनाम करना चाहा है। हिन्दू समाज पर इसका असर बिल्कुल ही नहीं पड़ेगा। हम सचेत रहकर जगह-जगह पर सुप्रचार करें।''

अनुभव-प्रकाश

मिली बीमारी से मुक्ति और प्रमोशन की युक्ति

डॉक्टर द्वारा ऐसा बताने पर कि मुझे हलका हार्टअटैक आया है, मैं आगरा में आई.सी.यू. में भर्ती हो गया और मुझे ३९ दिन की छुट्टी लेनी पड़ी, जिसके कारण मैं हाईकोर्ट द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार वार्षिक कार्य नहीं कर पाया। तत्कालीन जिला जज ने असंतुष्ट होकर मेरी गोपनीय चरित्रावली खराब कर दी और मैं मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट से अतिरिक्त जिला न्यायाधीश के पद पर पदोन्नति से वंचित हो गया। मेरे एक भाई की हार्टअटैक से मृत्यु हो चुकी है, जबकि २ अन्य भाइयों की बाईपास सर्जरी हो चुकी है। उक्त परिस्थितियों में मैं मानसिक रूप से बहुत परेशान हो गया था। उसके कुछ समय बाद से मैं रोज प्रातः टीवी पर पूज्य बापूजी के प्रवचन सुनने लगा। वर्ष २००० में मैंने गुरुपूर्णिमा महोत्सव पर भोपाल आकर दीक्षा ली।

डॉक्टरों ने मेरे पारिवारिक इतिहास को देखते हुए मुझे एन्जियोग्राफी कराने की सलाह दी। एन्जियोग्राफी के समय मैंने मन-ही-मन सद्गुरुदेव को पुकारा और ऑपरेशन टालने की प्रार्थना की क्योंकि मुझे विश्वास था कि मुझे भी हृदयरोग है। जब रिपोर्ट आयी तो एक आर्टरी में मात्र २०% रुकावट निकली, जो ४५ वर्षीय व्यक्ति के लिए सामान्य बात है। सद्गुरुदेव की कृपा से मेरा ऑपरेशन टल गया। मेरा रुका हुआ प्रमोशन भी अप्रत्याशित रूप से पूज्य गुरुदेव ने करवा दिया क्योंकि गुरुदेव की अमृतवाणी ने मुझमें इतना आत्मविश्वास भर दिया कि फिर मैंने अपना न्यायिक कार्य 'बहुत अच्छी' श्रेणी का करके दिखाया। मुझे दो अच्छी 'गोपनीय चरित्रावली' की आवश्यकता थी और जो प्रमोशन मीटिंग १ वर्ष पहले होनेवाली थी, वह गुरुदेव की कृपा से टल गयी। अतः जब मीटिंग हुई तब तक मुझे दो अच्छी 'सी.आर.' मिल चुकी थीं। इस प्रकार पूज्य गुरुदेव में आस्था रखने के कारण मुझे न केवल बीमारी से मुक्ति मिली बल्कि प्रमोशन के नुकसान की भरपाई भी हो गयी। सद्गुरुदेव की कृपा का मैं सदैव ऋणी रहूँगा।

– श्री के.पी. सिंह

(अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश), ग्वालियर।

साधकों के पथप्रदर्शक

कामी का साध्य कामिनी होती है, मोही का साध्य परिवार होता है, लोभी का साध्य धन होता है लेकिन साधक का साध्य तो परमात्मा होते हैं । जीवभाव की जंजीरों में जकड़ा साधक जब संसार की असारता को कुछ-कुछ जानने लगता है तो उसके हृदय में विशुद्ध आत्मिक सुख की प्यास जगती है। उसे पाने के लिए वह भिन्न-भिन्न शास्त्रों व अनेक साधनाओं का सहारा लेता है परंतु जब उसे यह अनुभव होता है कि उसका भीतरी खालीपन किसी प्रकार दूर नहीं हो रहा है तो वह अपने बल का अभिमान छोड़कर सर्वव्यापक सत्ता परमात्मा को सहाय के लिए पुकारता है । तब उसके साध्य परमात्मा ब्रह्मज्ञानी सद्‌गुरु के रूप में अवतरित होकर साकार रूप में अठखेलियाँ करते हैं।

इसी श्रृंखला में वर्तमान में ब्रह्मनिष्ठ सद्‌गुरु परम पूजनीय बापूजी साधक-भक्तों को दर्शन, सत्संग, ध्यान तथा कुंडलिनी योग व नादानुसंधान योग आदि यौगिक कुंजियों द्वारा हँसते, खेलते, खाते, पहनते सहज में ही मुक्तिमार्ग की यात्रा करा रहे हैं। 'गुरुग्रंथ साहिब' में आता है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ।
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥

पूज्यश्री कहते हैं : ''**हे साधक ! ईश्वर न दूर है न दुर्लभ** । आज दृढ़ संकल्प कर कि 'मैं परमात्मा का साक्षात्कार करके ही रहूँगा।' तू केवल एक कदम उठा, नौ सौ निन्यानवे कदम वह परमात्मा उठाने को तैयार है । कातरभाव से प्रार्थना करते-करते खो जा, जिसका है उसीका हो जा !''

जिज्ञासु अपनी जिज्ञासापूर्ति के लिए शास्त्र तो पढ़ते हैं लेकिन उनके गूढ़ रहस्य को न समझ पाने के कारण उनसे रसमय जीवन जीने की कला नहीं प्राप्त कर पाते। यह तो तभी सम्भव है जब शास्त्रों की उक्ति (**'वासुदेवः सर्वम्'** आदि) की अंतर में अनुभूति किये हुए कोई 'सुदुर्लभ' सत्पुरुष सुलभ हो जायें।

आत्मरस का पान करानेवाले पूज्यश्री से जो सौभाग्यशाली भक्त मंत्रदीक्षा लेते हैं व ध्यानयोग शिविरों में आते हैं, उन्हें आपकी अहैतुकी करुणा-कृपा से चित्शक्ति-उत्थान के दिव्य अनुभव होते हैं, जिससे चिंता-तनाव, हताशा-निराशा आदि पलायन कर जाते हैं और जीवन की उलझी गुत्थियाँ सुलझने लगती हैं । उनका काम राम में बदलने लगता है, ध्यान स्वाभाविक लगने लगता है और मन अंतरात्मा में आराम पाने लगता है। लोगों को बारह-बारह साल तपस्याएँ करने के बाद भी जो सच्चा सुख, भगवदीय शांति नहीं मिलती, वह बारह दिनों में ही उन्हें महसूस होने लगती है। कृपासिंधु बापूजी के चरणों में बैठकर सत्संग-श्रवण करनेमात्र से साधना में उन्नत होने की कुंजियाँ मिल जाती हैं और शास्त्रों के रहस्य हृदय में प्रकट होने लगते हैं।

साधकों के लिए आपका संदेश है : ''**अपने देवत्व में जागो । एक ही शरीर, मन, अंतःकरण को कब तक अपना मानते रहोगे ?** अनंत-अनंत अंतःकरण, अनंत-अनंत शरीर जिस सच्चिदानंद में प्रतिबिम्बित हो रहे हैं, वह शिवस्वरूप तुम हो। फूलों में सुगंध तुम्हीं हो। वृक्षों में रस तुम्हीं हो। पक्षियों में गीत तुम्हीं हो। सूर्य और चाँद में चमक तुम्हारी है । **अपने 'सर्वोऽहम्' स्वरूप को पहचानकर खुली आँख समाधिस्थ हो जाओ । देर न करो, काल कराल सिर पर है।**''

छात्रों के महान आचार्य

हम अपने बच्चों के लिए भोजन की, कपड़े की, आवास की, वाहनों की व्यवस्था तो कर देते हैं लेकिन एक बहुत बड़ी भूल यह करते हैं कि उनकी वैचारिक, नैतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नति को प्रायः नजरअंदाज कर देते हैं । स्कूलों-कॉलेजों में जो सिखाया जाता है वह आजीविका पाने के लिए उपयोगी हो सकता है परंतु जीवन-निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण इस काल में यदि विद्यार्थी को उसकी सुषुप्त शक्तियों को जगाने की युक्तियाँ न मिलें, उद्यम, साहस, धैर्य आदि को जीवन में लाने की कुंजियाँ न मिलें, माता-पिता व गुरुजनों के आदर के सुसंस्कार न मिलें तो ये पढ़े-लिखे विद्यार्थी ही आगे चलकर माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेजनेवाले, छोटी-छोटी बात में हताश-निराश होकर आत्महत्या करने पर उतारू होनेवाले 'सुशिक्षित विफल नागरिक' बनेंगे; पति-पत्नियों को तलाक देनेवाले खुदगर्ज, खिन्न, व्यसनी, विकृत-स्वार्थी सोचवाले अशांत आत्मा बनेंगे।

हमें अपने लाड़लों के सर्वांगीण विकास हेतु उन्हें सर्व विद्याओं की जननी ब्रह्मविद्या के अनुभवनिष्ठ आचार्य परम पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य में एवं 'विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों' में अवश्य भेजना चाहिए। वहाँ उन्हें माता-पिता की सेवा के संस्कार एवं अपने जीवन-उत्थान का राजमार्ग मिल जाता है।

पूज्यश्री देश के विभिन्न स्थानों में घूम-घूमकर 'विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों' के द्वारा, आपश्री की प्रेरणा से चलाये जा रहे १९,००० 'बाल संस्कार केन्द्रों' के द्वारा तथा 'युवाधन सुरक्षा अभियान' व नवनिर्मित 'युवा सेवा संघ' के द्वारा राष्ट्र में बाल व युवा जागृति का शंखनाद कर रहे हैं। आप 'संयम-शिक्षा' के प्रबल पक्षधर हैं । आपके संयम-शिक्षा सद्ग्रंथ 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' की एक करोड़ बहत्तर लाख से भी अधिक प्रतियाँ बँट चुकी हैं। अखिल भारतीय साधु समाज के सचिव व संत समिति के महामंत्री श्री हंसदासजी महाराज ने भी इस सद्ग्रंथ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

क्रिकेट मैचों में भारत की विजय में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाले सफल तेज बॉलर इशांत शर्मा कहते हैं : "जब से मैंने पूज्य बापूजी का मार्गदर्शन व आशीर्वाद पाया है, तब से मेरे जीवन में सफलता का द्वार खुल गया है। 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' ग्रंथ देश के हर युवक-युवती को अवश्य पढ़ना चाहिए।"

पूज्यश्री की समझाने की शैली इतनी सूत्रात्मक, स्नेहात्मक, हितभरी व अद्भुत है कि कितना भी कमजोर विद्यार्थी हो, उसे सफल जीवन की कुंजियाँ अच्छी तरह से समझ में आ जाती हैं। आपकी यह बहुत बड़ी खासियत है कि एक ओर आप वेदांत के अनुभवनिष्ठ आचार्य हैं तो दूसरी ओर बाल मनोविज्ञान के समर्थ ज्ञाता भी। आप 'बाले बालवताम्' - बालकों में बालवत् होकर हँसते-मुस्कराते उन्हें गीता व वेदांत का सार भाग अत्यंत सरल, सुलभ भाषा में बताते हैं।

पूज्यश्री की सारस्वत्य मंत्रदीक्षा, यौगिक प्रयोगों व सफलता की कुंजियों के अद्भुत परिणाम आज समाज में प्रत्यक्ष दिखायी दे रहे हैं : अनेक राष्ट्रस्तरीय संगीत प्रतियोगिताओं में प्रथम विजेता संगीत जगत की नवोदित गायिका भव्या पंडित अपनी सफलता का सम्पूर्ण श्रेय बापूजी से प्राप्त सारस्वत्य मंत्रदीक्षा व गुरुकृपा को देती हैं। 'नेशनल रिसर्च डेवलपमेंट कॉरपोरेशन' के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित युवा वैज्ञानिक एवं फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. राहुल कत्याल अपने कमजोर विद्यार्थी-जीवन को याद कर कहते हैं कि ''पूज्य बापूजी से प्राप्त सारस्वत्य मंत्रदीक्षा प्रतिभा-विकास की संजीवनी बूटी है।'' ऐसा ही कहना है अजय मिश्रा का, जिन्होंने दीक्षा के प्रभाव से स्मृति की कमजोरी को भगाकर नोकिया में 'ग्लोबल प्रॉडक्ट मैनेजर' पद प्राप्त किया। वे सालाना करीब ३० लाख रुपये वेतन पाते हैं। भैंसें चरानेवाला व ढाई रुपये की टायर की चप्पल खरीदने में भी मुश्किल अनुभव करनेवाला गरीब बालक क्षितिश सोनी पूज्यश्री से प्राप्त सारस्वत्य मंत्र के अनुष्ठान व 'श्री आसारामायण पाठ' के प्रभाव से आज 'गो एयर' में एयरक्राफ्ट इंजीनियर है व सालाना २१.६० लाख रुपये वेतन पा रहे हैं। एक ऐसे भी युवक हैं जिन्हें पूज्यश्री से प्राप्त सारस्वत्य मंत्रदीक्षा व स्मृतिवर्धक यौगिक प्रयोगों ने विश्व के २५ अद्भुत व्यक्तियों में स्थान दिला दिया है। वे हैं वीरेन्द्र मेहता, जिन्होंने 'ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड लर्नर्स डिक्शनरी' के ८०,००० शब्दों को उनकी पृष्ठ-संख्या सहित याद कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके सिवा लाखों ऐसे विद्यार्थी हैं जिन्हें ब्रह्मविद्या के आचार्य पूज्यश्री का मार्गदर्शन मिला और उनकी स्मृतिशक्ति, निर्णयक्षमता एवं अनेक सुषुप्त योग्यताओं का विलक्षण विकास हुआ है तथा हर क्षेत्र में सफलता उनके चरण चूमने लगी है।

पूज्यश्री विद्यार्थियों में अपने बुलंद उपदेशों व शक्तिपात वर्षा द्वारा अद्भुत आत्मबल का संचार कर देते हैं। आपसे मंत्रदीक्षा पाकर आपके बताये भक्ति, योग, साधना व उपासना के मार्ग पर तत्परता से चलनेवाले युवक सुरेशभाई आज श्री सुरेशानंदजी के रूप में सम्माननीय हो चुके हैं। उनका जीवन जन-जन को रसमय, उन्नत, सत्कर्म-परायण जीवन की खबर दे रहा है। पूर्व-जीवन कैसा भी हो, कुसंग से कितना भी गिरा हुआ हो, साँईं के सत्संग से, सेवायोग से, सत्कर्मयोग से आज उन्नति की कितनी बुलंदियों को छू रहा है ! अतः किसीको हताश-निराश होने की आवश्यकता नहीं है। श्री सुरेशानंदजी का पूर्व-जीवन सबको सुविदित है। कुसंग से इतना पतन हो चुका था कि घर में रहने को नहीं मिलता था, फुटपाथ पर जीवन कटता था पर अभी लखपतियों-करोड़पतियों के और समाज के लाखों लोगों के स्नेहभाजन, श्रद्धाभाजन सुरेशभाई साँईं के दुलारे होकर आपके समक्ष हैं। कितना पतन था, अब कितनी ऊँचाई ! तभी तो बापूजी से दीक्षित सभी विद्यार्थियों का यह घोषवाक्य है : **बापूजी के बच्चे, नहीं रहते कच्चे।**

पूज्यश्री के मार्गदर्शन में स्कूलों में गरीब विद्यार्थियों को पेन, पेंसिल, नोटबुक, स्कूल बैग, यूनिफॉर्म व प्रेरक सत्साहित्य आदि का निःशुल्क वितरण किया जाता है। आदिवासी क्षेत्रों के छात्रों में बिछायत, फर्नीचर, कपड़े वितरण के साथ बाल-भोज (भंडारा) का भी आयोजन किया जाता है।

छुट्टियों में विद्यार्थियों की दीनता-हीनता व दुर्बलता की छुट्टी करने हेतु 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' का एवं स्कूलों में योग व संस्कार शिक्षा प्रदान करने हेतु 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा' अभियानों का आयोजन जोर-शोर से किया जा रहा है। छात्रों के विकास के लिए राष्ट्रस्तरीय ज्ञान प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जा रहा है, जिनमें मात्र तीन प्रतियोगिताओं में २२ लाख से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं। देश के युवाओं को 'वेलेन्टाईन डे' की पाश्चात्य आँधी से बचाने तथा माता-पिता व संतानों के बीच आपसी प्रेम बढ़ाने हेतु पूज्यश्री की पहल है : **'मातृ-पितृ पूजन दिवस'** । यह हर वर्ष १४ फरवरी को घरों व अनेक विद्यालयों में मनाया जाता है।

विद्यार्थियों के लिए पूज्यश्री के सत्संग की वी.सी.डी., MP3 तथा सत्साहित्य भी उपलब्ध है, जिनमें यादशक्ति बढ़ाने की व परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने की युक्तियाँ तथा जीवन को सही दिशा देनेवाले छोटे-छोटे प्रेरक प्रसंग हैं। इनका लाभ लेकर लाखों-लाखों युवानों का जीवन उन्नत हुआ है, हो रहा है और होता रहेगा।

समर्थ मार्गदर्शक परम पूज्य बापूजी संयम की शिक्षा देकर युवकों को सुदृढ़ शरीर, कुशाग्र बुद्धि, महान आत्मबल व बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न बनाकर राष्ट्र एवं विश्व को आदर्श नागरिक देना चाहते हैं। पूज्यश्री कहते हैं : ''जिन व्यक्तियों के जीवन में संयम-सदाचार नहीं है, वे न तो स्वयं की ठीक से उन्नति कर पाते हैं और न ही समाज में कोई महान कार्य कर पाते हैं। भौतिकता की विलासिता और अहंकार उनको ले डूबता है। वे रावण और कंस की परम्परा में जा डूबते हैं। ऐसे व्यक्तियों से बना हुआ समाज और देश भी सच्ची सुख-शांति व आध्यात्मिक उन्नति में पिछड़ जाता है।''

संतों के प्यारे

संत-समाज पूज्य बापूजी के प्रति बहुत स्नेह रखता है। प्रस्तुत है संतों के आत्मीयता भरे उद्‌गारों की एक झलक :

प्रसिद्ध योगाचार्य श्री रामदेवजी महाराज आज के हर व्यक्ति को पूज्यश्री की जरूरत बताते हैं : ''श्रद्धेय-वंदनीय, जिनके दर्शन से कोटि-कोटि जनों के आत्मा को शांति मिली है व हृदय उन्नत हुआ है, ऐसे महामनीषी संत श्री आशारामजी के दर्शन करके मैं कृतार्थ हुआ। जीवन में लगभग हर व्यक्ति निराश है और उसे आशारामजी की जरूरत है। श्रद्धेय, वंदनीय महाराज श्री आशारामजी की तो सारी दुनिया को जरूरत है।

आप राह दिखाते रहना, हम भी आपके पीछे-पीछे चलते रहेंगे और एक दिन मंजिल मिलेगी ही।''

'कांची कामकोटि पीठ' के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी पूज्यश्री की ऊँचाई का वर्णन करते हुए कहते हैं : ''परम पूज्य बापूजी ब्रह्मस्वरूप संत हैं। उनके दर्शनमात्र से जीवन में उन्नति हो जाती है।''

सुप्रसिद्ध कथाकार संत श्री मोरारी बापू पूज्यश्री के दर्शन के बाद अपनी अनुभूति व्यक्त करते हुए कहते हैं :

''पूज्य बापू के दर्शन करके **'दिने-दिने नवं-नवं प्रतिक्षण वर्धमानम्'** अर्थात् बापू नित्य नवीन, नित्य वर्धनीय आनंदस्वरूप हैं ऐसा अनुभव हो रहा है।''
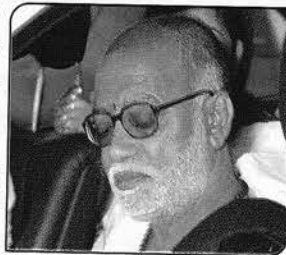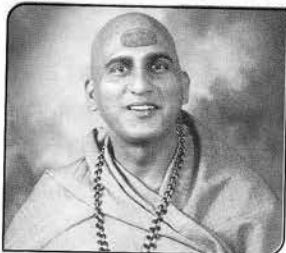
'जूना अखाड़ा' पीठाधीश्वर स्वामी श्री अवधेशानंदजी पूज्यश्री का राष्ट्र की अमूल्य धरोहर के रूप में वर्णन करते हैं :

''पूज्य बापूजी में हिमालय जैसी उच्चता, पवित्रता, श्रेष्ठता है और सागरतल जैसी गम्भीरता है। वे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं।''

अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय के जगद्‌गुरु आचार्य श्री रामदयाल-दासजी महाराज पूज्यश्री के द्वारा संस्कृति-रक्षार्थ किये गये प्रयासों का गुणगान करते हुए कहते हैं : ''महाभाग पूज्य आसारामजी बापू ने समाज में, हिन्दू संस्कृति और युवा संस्कृति में अध्यात्म संस्कृति के आशातीत प्राण फूँक दिये हैं।''

अखिल भारतीय साधु-समाज के सचिव एवं संत समिति के महामंत्री श्री हंसदासजी महाराज का कहना है :

''पूज्य बापूजी ने बहुत अच्छा कार्य किया है युवाओं के लिए। इस देश के अंदर जब युवाशक्ति जागेगी तो निश्चितरूप से परिवर्तन होगा, राष्ट्र की रक्षा होगी।''

वि.हि.प. के आचार्य श्री गिरिराज किशोरजी कहते हैं : ''हमारे परम पूज्य श्री आसारामजी बापू बहुत ही कम समय में संस्कृति का जतन और उत्थान करनेवाले महान संत हैं।''

महामंडलेश्वर श्री परमात्मानंदजी महाराज के ये वचन पूज्य बापूजी के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा व निष्ठा को उजागर करते हैं : ''पूज्य बापूजी के लिए हमारे हृदय में आराध्य देव जैसा सम्मान है।''

'रतवाड़ा साहिब गुरुद्वारा' के प्रमुख श्री हरपाल सिंहजी महाराज कहते हैं : ''हमारे पूज्य गुरुदेव बाबाजी कहते थे कि 'आज बापूजी जैसे महान कर्मयोगी संत संसार में बहुत ही कम मिलते हैं, जो ऐसा सर्व-समावेशक

''संत श्री आसारामजी बापू के यहाँ सबसे अधिक जनता आती है।''

– विरक्तशिरोमणि श्री वामदेवजी महाराज

अद्वैत सिद्धांत का प्रचार संसार में कर रहे हैं।' मैं इनको दिल की गहराइयों से धन्यवाद देता हूँ, कोटि-कोटि नमस्कार करता हूँ।''

महामंडलेश्वर श्री देवेन्द्रानंदजी ने संतशिरोमणि बापूजी की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा है :

''न राज है न सर पे ताज है,
फिर भी आप हम सबके सरताज हैं।
यूँ तो हैं और होंगे बहुत संत मगर,
भारत के कोहनूर आप हैं ॥''

'वारकरी सम्प्रदाय, महाराष्ट्र' के श्री उद्धवजी महाराज कहते हैं : ''हमारे पूज्य संत आसारामजी बापू क्रांतिकारी संत हैं, विश्ववंदनीय संत हैं।''

वृन्दावन के आचार्य स्वामी श्री रमेशानंदजी कहते हैं : ''धर्म की महिमा बापूजी ने केवल पूरे राष्ट्र ही नहीं, विदेशों तक भी पहुँचायी। इस उम्र में भी उनका इतना बड़ा सत्कार्य ऐसा है कि उसकी प्रशंसा के लिए कोई शब्द नहीं है !''
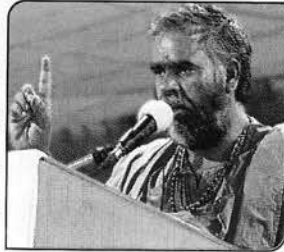
विरक्तशिरोमणि श्री वामदेवजी महाराज ने पूज्यश्री को सबसे लोकप्रिय संत घोषित करते हुए कहा है : ''संत श्री आसारामजी बापू के यहाँ सबसे अधिक जनता आती है, कारण कि इनके पास भगवन्नाम-संकीर्तन का जादू, सरल व्यवहार, प्रेमरसभरी वाणी तथा जीवन के मूल प्रश्नों का उत्तर भी है।''

क्रांतिकारी वक्ता साध्वी ऋतम्भराजी के वचन हैं : ''प्रातःस्मरणीय, सायं-वंदनीय, सारे राष्ट्र ही नहीं अपितु सारे विश्व में भक्ति की गंगा को प्रवाहित करनेवाले पूज्य बापूजी को मैं वंदन करती हूँ।''

प्रसिद्ध कथाकार सुश्री कनकेश्वरी देवी पूज्यश्री के सत्संग की महिमा का बखान करते हुए कहती हैं :

''अपने पूर्वजन्मों के पुण्य इकट्ठे होते हैं और ईश्वर की परम कृपा होती है, तब ऐसा ब्रह्मज्ञान का दिव्य सत्संग सुनने को मिलता है, जैसा पूज्यपाद बापूजी के श्रीमुख से सुनने को मिल रहा है।''

भूतपूर्व पादरी एवं वर्तमान में 'हिन्दू जागरण मंच' के प्रदेश संगठन मंत्री डॉ. सुमन का कहना है :

''मैं कई जगहों पर घूमा और देखा कि लोग भगवान को पकड़ने के लिए साधना में लगे हैं लेकिन बापूजी के पास आया तो ऐसा लगा कि भगवान ने ही मुझे पकड़ लिया है।''

उल्लेखनीय है कि मुंबई में २९ जनवरी २००९ को विशाल संत-सम्मेलन हुआ, जिसमें देश के लगभग सभी मत-पंथ-सम्प्रदायों एवं धर्मों के प्रमुख संत उपस्थित रहे। विभिन्न जगद्गुरु शंकराचार्य, महामंडलेश्वर, महंत, जैन मुनि, बौद्ध संत आदि ने भी इसमें अपनी उपस्थिति दर्शायी। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद, अखिल भारतीय साधु समाज, संत समिति, अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय, रामजन्मभूमि न्यास, आचार्य सभा, परमार्थ निकेतन, कृष्णप्रणामी सम्प्रदाय, वारकरी सम्प्रदाय, विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि संगठनों के प्रमुखों-प्रतिनिधियों ने सभा-अध्यक्ष के रूप में सर्वसम्मति से विश्ववंदनीय परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू को चुना तथा उनके प्रति अपनी आत्मीयता एवं विश्वास व्यक्त किया।

जब भारतीय संस्कृति के विरोधियों द्वारा आश्रम के बारे में कुप्रचार कर समाज को दिग्भ्रमित करने की कोशिश की गयी, तब विभिन्न संतों व समाजसेवी संगठनों ने जगह-जगह सभाओं एवं रैलियों के माध्यम से इसका जमकर विरोध किया। विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, गायत्री परिवार, स्वदेशी जागरण मंच, रामसेतु रक्षा मंच, ब्रह्म समाज, राष्ट्र सेविका समिति, भारतीय किसान संघ सहित अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी इनमें उपस्थित रहे।

आँखों पर द्वेष का ग्रहण लगा है, उसे हटाकर देखो, उनका तेज अक्षय है !

भास्कर न्यूज (राजकोट, १३-९-२००९)
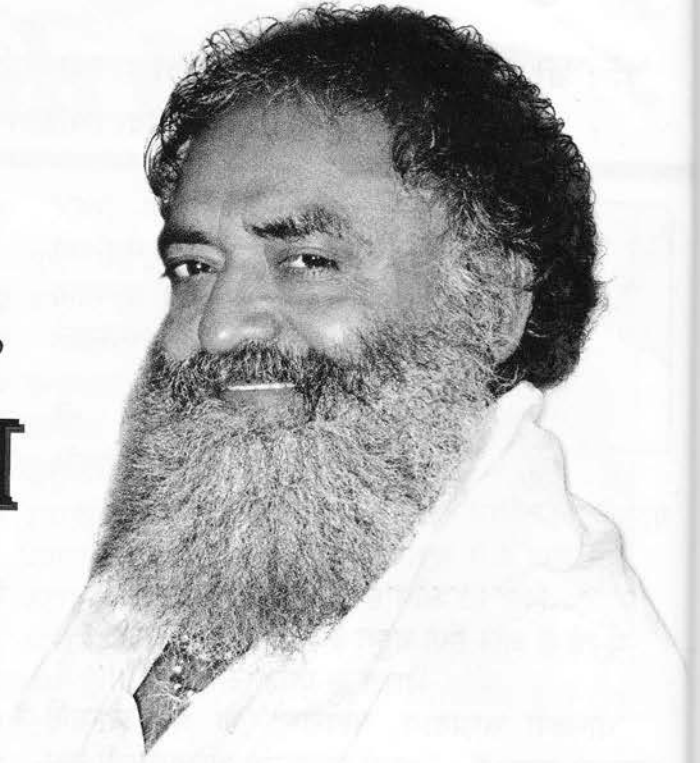
परम पूज्य संत श्री आसारामजी महाराज एक ऐसे संत हैं जो कि सूर्य की तरह सारे विश्व को सच्चे ज्ञान का प्रकाश दे रहे हैं। आधुनिकता की तपन में तप रहे मानव-समाज को चंद्रमा की तरह शीतलता का दान दे रहे हैं। संतश्री रात-दिन इस पृथ्वीमंडल पर भ्रमण करके अपने अनुभव-सम्पन्न ज्ञान का दान तो मानव-समाज को कर ही रहे हैं, साथ ही दीन-दुःखियों की सेवा का महान कार्य भी निष्कामतापूर्वक कर रहे हैं। गरीब, निराधारों को मकान बनवाकर देना, बेरोजगारों को मुफ्त भोजन तथा नकद दक्षिणा देना, कपड़े तथा नित्य उपयोगी वस्तुएँ इत्यादि देना - इतना सब करने पर भी वे बदले में कुछ चाहते नहीं, चरणों में प्रणाम भी नहीं करने देते... !

परंतु जिस प्रकार सूर्य और चंद्रमा में उत्तम गुण होने पर भी राहु तो सदा उनको ग्रस्त करके ग्रहण (सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण) करने के लिए पीछे ही लगा रहता है, ऐसे ही समाज-कंटक और आसुरी स्वभाव के जो लोग हैं वे तो सदा संत श्री आसारामजी बापू जैसे महापुरुषों पर झूठे आरोप और कलंकरूपी ग्रहण लगाने में लगे रहते हैं। जैसे ग्रहण के समय सूर्य या चंद्रमा का प्रकाश भूमि पर नहीं पहुँच सकता, अंधकार छा जाता है, ऐसे ही तापमय अंतःकरणवाले वर्णसंकर लोग महापुरुषों के उत्कृष्ट आध्यात्मिक तेज और यशरूपी प्रकाश को ढककर जगत में अज्ञानरूपी अंधकार को फैलाने के प्रयास में ही सदा संलग्न रहते हैं।

परंतु जैसे सूर्य या चंद्रमा पर ग्रहण थोड़े समय के लिए ही लगता है और अंधकार का आभास भी हमको यहीं केवल धरती पर ही होता है, आकाश में छाये हुए उसके वास्तविक तेज को तो कोई क्षति नहीं पहुँचती, ऐसे ही संत श्री आसारामजी महाराज जैसे अध्यात्म-तेज से परिपूर्ण महापुरुष पर झूठे आरोप और लांछन लगाकर उनके यशरूपी प्रकाश को ढकने और समाज को महापुरुष के दिव्य लाभ से वंचित करने के 'ग्रहण-कार्य' भी लम्बे समय तक टिक नहीं सकते। समाज को गलत रास्ते पर ले जानेवाले दुष्टचरित्र पातकियों की पोल आखिर खुल ही जाती है। समाज द्वारा ऐसे दुराचारियों को दुत्कारा जाता है। संतों का यश तथा समता का प्रकाश तो सदा सलामत ही रहता है।

एक बात विशेष ध्यान में रखनी है कि ग्रहण के समय जो मूर्ख लोग अंधकार से भ्रमित होकर ग्रहणकाल में ही खाने, पीने व संसार-व्यवहार में लग जाते हैं, वे अनेक प्रकार के रोग, कष्ट व मानसिक अशांति के भागी बनते हैं। इससे विपरीत जो बुद्धिमान लोग ग्रहण के समय का

मुझे लगता है कि बापूजी सबके आत्मसूर्य हैं। आपके प्रति मेरा विश्वास व अटूट निष्ठा बढ़े इस हेतु मेरा नमन स्वीकार करें।'' - **स्वामी अवधेशानंदजी, जूना अखाड़ा पीठाधीश्वर**

सदुपयोग करके जप-ध्यान-दानादि सत्कर्मों द्वारा ईश्वर-आराधना में लग जाते हैं, वे सामान्य दिनों की अपेक्षा लाखों गुना अधिक पुण्य, लाभ, शांति व सिद्धि पा लेते हैं। सूर्य-चंद्र तो ग्रहण से अप्रभावित रहकर यथास्थित ही रहते हैं। इसी प्रकार महापुरुषों के यश-काल में तो सभी लोग लाभ उठाते हैं परंतु ऐसे कसौटी-काल में भी जो भक्त इस समय को ग्रहणतुल्य समझकर अपनी निष्ठा से विचलित नहीं होते परंतु अपनी व समाज की उन्नति के सद्गुरुप्रदत्त दैवी कार्य में अधिक दृढ़ता व उत्साह से लग जाते हैं, ऐसे सत्पात्र शिष्य तो वास्तव में शीघ्र ही आत्मशांति और भक्तिरूपी सिद्धि को पा लेते हैं। उनके लिए तो मुक्ति का द्वार सदा खुला ही रहता है, ऐसे शिष्य धरती पर के देव कहलाते हैं।

जो नासमझ लोग कसौटी के इस ग्रहणकाल में गुमराह हो जाते हैं और प्रमादी बनकर भ्रमित हो जाते हैं, वे भारी नुकसान भी उठाते हैं तथा संत श्री आसारामजी महाराज जैसे महापुरुषों की सहज ज्ञानरूपी चिंतामणि से वंचित रहकर काँच की कनी से बनी नकली चिंतामणि से सिद्धि-प्राप्ति की आशा में जीवन बिता देते हैं। ऐसे लोग इहलोक में तो दुःखी रहते हैं, परलोक में भी दुःखी होते हैं।

इसीलिए संतों ने, सत्शास्त्रों ने तथा भगवान ने भी बारम्बार नैमित्तिक अवतार लेकर करुणा-कृपा करके मनुष्य-जाति को बारम्बार सावधान करते हुए कहा है कि कोई नीच, स्वार्थी चाहे जितना भ्रमित करे परंतु सच्चे संतों व सद्गुरुओं में कभी भी दोषदृष्टि नहीं करनी चाहिए, सद्गुरु में सदा भगवद्भाव ही करो तो संसार-सागर गाय के खुर को पार करने के समान सुगम हो जायेगा।

पूर्वकाल में सभी महापुरुषों जैसे कि नानकजी, कबीरजी, ज्ञानेश्वरजी, तुकारामजी, एकनाथजी आदि पर भी दुष्टबुद्धि और चरित्रहीन समाज-कंटकों ने झूठे, घृणित आरोप लगाये; तब उन महापुरुषों के भक्तों ने सत्शास्त्रों और भगवान की बतायी उपरोक्त युक्ति का ही सदुपयोग किया और संसार-सागर गोपद की तरह पार कर गये। क्योंकि ईश्वरस्वरूप सच्चे सद्गुरु में श्रद्धा तथा विश्वास ये दो हाथ हैं और साधना (भक्ति) व सेवा ये दो आधारस्वरूप पैर हैं। तो जैसे हाथ और पैर से रहित व्यक्ति सागर के जल में तैर नहीं सकता, वह तो डूब जाता है, ऐसे ही अज्ञानी और द्वेषी चित्तवाले संतनिंदकरूपी पापियों के सम्पर्क में आकर तथा उनके अनर्गल दोषारोपण के शब्दोंरूपी कुठाराघातों से यदि शिष्य अपने श्रद्धा, विश्वास, भक्ति और सेवारूपी हाथ-पैर कटा डालेगा तो फिर भवसागर तरेगा कैसे ?

जैसे ग्रहण में सूर्य या चंद्रमा का तो कुछ नहीं बिगड़ता उलटा मनुष्य ही अपनी सुमति व दुर्मति से लाभ या हानि उठाता है, ऐसे ही इन निंदकों से प्रेरित अपयश में भी सच्चे संतों को तो कोई हानि-लाभ होता नहीं, परंतु चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद ईश्वरप्राप्ति द्वारा भवबंधन से मुक्ति पाने के लिए यह मानव-देह मिली है-उन मनुष्यों को तो अपनी सुमति द्वारा अपने सद्गुरु से मिल रहे परम लाभ के बारे में अवश्य विवेक करना चाहिए।

जो पूज्य बापूजी जैसे संतों की निंदा करते हैं, ऐसे लोग राहु द्वारा सर्जित ग्रहणकाल जैसे हैं। सूर्य-चंद्रमा तो प्रकाशमान हैं पर उनके ऊपर ग्रहण की कालिमा छा जाने से वे काले दिखायी देते हैं, वैसे ही जिन निंदकों की आँखों में द्वेषरूपी ग्रहण की कालिमा है ऐसे लोग सच्चे संतों में भी दोषदर्शन करते हैं। इतना ही नहीं, ग्रहणकाल तो थोड़े ही समय तक होता है परंतु उसमें रखी गयीं सभी खाद्य वस्तुएँ अपवित्र हो जाती हैं, उसी प्रकार जो लोग ऐसे द्वेषरूपी ग्रहणयुक्त नजरवाले लोगों का संग करते हैं या तो उनकी बातों में आते हैं उनको तो जन्म-मरण व अशांतिरूपी दुःख लग जाता है। पर जो बुद्धिशाली व विवेकवान लोग हैं, वे तो अपने पास गुरु में दृढ़ श्रद्धा-भक्तिरूपी कुश रखते हैं, उनको निंदकरूपी ग्रहण स्पर्श नहीं करता और वे दुःखरूपी अपवित्रता से कुशलतापूर्वक बच जाते हैं।

पर्वों का पुंज : दीपावली

दीपावली पर्व : १५ से १९ अक्टूबर

(पूज्य बापूजी के पावन वचनामृत)
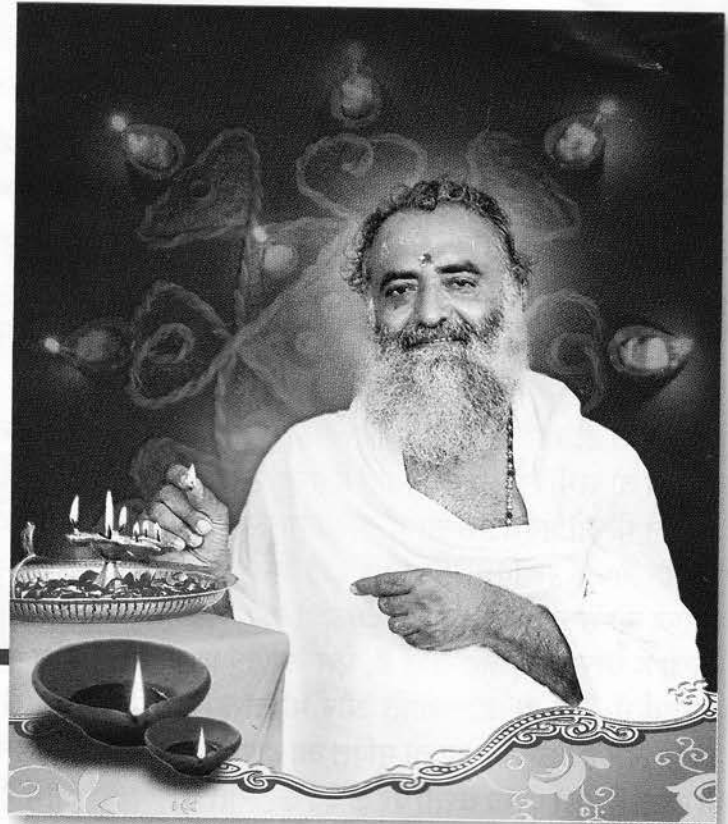
भारतीय संस्कृति की कितनी सुंदर व्यवस्था है कि नश्वर शरीर से, नश्वर धन से, नश्वर समय से, नश्वर संबंधों से शाश्वत को पाने के लिए कैसे-कैसे पर्वों-त्यौहारों की व्यवस्था करके हँसते-खेलते हमें वास्तविक सत्य तक पहुँचने का मार्ग बता दिया है। दूसरे धर्मों में कहीं छः पर्व हैं, कहीं सात पर्व हैं लेकिन भारतीय संस्कृति में चालीस पर्व हैं, जिनमें एक है पर्वों का गुच्छा दीपावली। धनतेरस, काली चौदस, दीपावली, नूतनवर्ष और भाईदूज - इन पाँच पर्वों का पुंज माने दीपावली का त्यौहार।

बाह्य धन के साथ-साथ आत्मधन कमाने का, आंतरिक शांति, आंतरिक प्रीति पाने का दिन है - **धनतेरस**।

भगवान की प्राप्ति में जो धन काम आये वही वास्तविक धन है, फिर चाहे वह रुपये-पैसों का धन हो, चाहे गौ-धन, गज-धन, बुद्धि-धन अथवा लोकसम्पर्क का धन हो। धनतेरस को आत्मधन का चिंतन करें, आत्मसुख के लिए धन का कुछ हिस्सा सत्कर्म में लगायें। अनीति का धन परिवार का, बेटे-बेटियों का सत्यानाश कर देता है इसलिए सावधान रहें, तामसी धन से बचें। धन में चौसठ दुर्गुण और सोलह सद्‌गुण हैं। दुर्गुण दूर करने के लिए धनतेरस के दिन लक्ष्मी को नारायण की अर्द्धांगिनी मानकर उसका पूजन और सदुपयोग करने का संकल्प किया जाता है।

धन आता है तो मानव कामी, क्रोधी, लोभी, विलासी, अहंकारी हो जाता है, न करने जैसा कर्म भी करता है लेकिन धन में यह सद्‌गुण भी है कि धन आता है तो आदमी पितरों का तर्पण, माँ-बाप की, धर्म की सेवा कर सकता है; गुरुजनों की भक्ति, ज्ञान का प्रचार-प्रसार, शास्त्रों का पठन-वितरण आदि में भी धन का सदुपयोग कर सकता है। इस प्रकार दुर्गुणों से बचकर सद्‌गुणों को विकसित कर दे तो धन सुखदायी हो जाता है, उसको बोलते हैं महालक्ष्मी-पूजन।

दीपावली का पर्व वित्त को लक्ष्मी बना दे और हमें अपने हृदय में छुपे हुए नारायण के प्रसाद से पावन कर दे इसलिए हम माँ लक्ष्मी का पूजन करते हैं। महान उद्देश्य के लिए जिस धन का उपयोग हो समझो वह लक्ष्मी है और जो चिंता, ईर्ष्या देती है वह सम्पदा है। जहाँ सम्पदा होती

है वहाँ विपदा भी होती है लेकिन जहाँ लक्ष्मी होती हैं वहाँ नारायण होते हैं। सम्पदा तो वही-की-वही लेकिन पूजन, संस्कार करके उसको महालक्ष्मी के रूप में हम आदरणीय कर देते हैं।

फिर आती है **नरक चतुर्दशी** । इसको काली चौदस या छोटी दिवाली भी बोलते हैं । छोटी दीपावली अर्थात् छोटी खुशी । जिसने लापरवाही हटा दी, तत्परता रखी उसके जीवन में कुछ खुशी आयेगी लेकिन ज्ञान का दीया जलेगा तो पूरी खुशी आयेगी।

आज के दिन भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर को मारा अर्थात् हमें भी निराशा, उत्साहहीनता, द्वेष, चिंता, पलायनवादिता आदि के नारकीय विचारों को तथा आलस्य, प्रमाद व लापरवाही, बेजवाबदारी के कर्मों को अपने जीवन से विदाई देने का और जीवन में प्रकाश लाने का संकल्प करना चाहिए । नरक चतुर्दशी की रात्रि का जागरण और जप चित्शक्ति को परमात्मा में ले जाने में बड़ी मदद करता है। कार्तिक-स्नान का व्रत करनेवाले के लिए कार्तिक मास में तेल-मालिश करना वर्जित है लेकिन नरक चतुर्दशी को तिलों के तेल से मालिश करके स्नान करना चाहिए, इससे विशेष लाभ होता है।

फिर आती है **दीपावली** अर्थात् दीये जगमगाने और ज्ञान का प्रकाश करने का पर्व। अपने हृदय में भी ज्ञान का दीया जलाओ । बाहर कितने भी दीये जलें पर अंदर अज्ञान है तो आदमी फरियाद करता हुआ जियेगा कि 'मैं तो परेशान हूँ, मैं तो ऐसा हूँ ...' तो वह परेशान ही रहता है । जो ऐसा समझता है कि 'परेशानियों के सिर पर पैर रखकर अपने आत्मस्वभाव को जानने के लिए मेरा जन्म हुआ है और सुख-दुःख में सम रहते हुए सत्कर्म में लगा रहता है वह बाजी जीत जाता है।' अतः अपने जीवन से अज्ञान का अंधकार दूर कर ज्ञान के प्रकाश में जियो। सब बीत जायेगा, किसी बात को पकड़कर दुःखी, अभिमानी, चिंतित होने की कोई जरूरत नहीं है, यह तो संसार की सरिता बह रही है, तू तैरते-तैरते यात्रा पूरी करके भगवान तक पहुँच जा।

जिस प्रकार दीपावली को व्यापारी पुराना लेन-देन पूरा कर लेता है, उसी प्रकार हमें तन से रोग, हृदय से अज्ञान और दिल से द्वेष मिटानेवाले सत्संग का सहारा लेकर आपसी वैरभाव भुला देना चाहिए। यदि कोई ऐसा करता है तो जीवन में इससे बढ़िया दिन और क्या हो सकता है !

मिठाई खाना-खिलाना यह तो बाहर की दिवाली हो गयी, अंदर की दिवाली है कि आप मधुमय परमात्म-सुख में जियो, अपना स्वभाव मधुमय बनाओ, दुःखमय, कटु स्वभाव से अपने को बचाओ।

तुम तो दीपावली के दीये जलाओगे और थोड़ा सुख का अनुभव करोगे पर तुमसे ज्यादा तो पतंगे-परवाने सुख मनायेंगे, लेकिन थोड़ी देर में तपके, जलके तड़पके मर जायेंगे । विषय-विकारों से मजा लेना, यह पतंगों-परवानों का रास्ता है; अपने-आपमें, परमात्म-सुख में मजा लेना, सुख-दुःख में सम रहना, ज्ञान का दीया जलाना, परमात्म-रस और परमात्म-प्रेम छलकाना यह आध्यात्मिक दीपावली ही वास्तविक दीपावली है।

इस दिन आप अपने घर में दीये जलाओ लेकिन अपने गरीब पड़ोसी का भी ध्यान रखो, वहाँ भी दीये जलाकर आओ, गरीब बच्चों में कपड़े, मिठाई बाँटकर आओ। छोटे-से-छोटे व्यक्ति से भी स्नेह से मिलो और अपना बड़प्पन भूलो। जो दूसरों का हित हो ऐसा सोचता है, करता है उसका अपना ही भला होता है। वेद भगवान कहते हैं कि 'जो ज्ञानसंयुक्त दूसरों की सेवा करता है, वह स्वयं प्रसन्न और उन्नत हो जाता है, यशस्वी हो जाता है।'

फिर आता है **नूतन वर्ष** । दीपावली वर्ष का आखिरी दिन और कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा वर्ष का प्रथम दिन है (गुजराती विक्रम संवत् अनुसार) । यह दिन आपके

दीपावली

जीवन की डायरी का पन्ना बदलने का दिन है। आज के दिन भगवान नारायण ने वामन रूप लेकर राजा बलि से उनका सर्वस्व ले लिया था। बलि ने भी जिसका सर्वस्व है उस सर्वेश्वर को अपना सब कुछ अर्पित करके रिझा लिया।

'महाभारत' में पितामह भीष्म कहते हैं : 'युधिष्ठिर ! आज नूतन वर्ष के प्रथम दिन जो मनुष्य हर्ष में रहता है, उसका पूरा वर्ष हर्ष में जाता है और जो शोक में रहता है, उसका पूरा वर्ष शोक में ही व्यतीत होता है।'

यमद्वितीया अर्थात् भाईदूज, यह भाई-बहन के हृदय में एक-दूसरे के प्रति दिव्य भाव प्रकटाने का पर्व है। इस दिन यमुनाजी ने अपने भैया को अपने घर भोजन कराया था। आज के दिन जो भाई अपनी बहन के हाथ का भोजन करता है, उसको यमदंड से मुक्ति मिल जाती है। कोई भी बहन ऐसा नहीं चाहेगी कि मेरा भाई इस दृश्य-जगत में उलझे, कामी-क्रोधी, लोभी-मोही, अहंकारी, पातकी रहे और बार-बार जन्मे-मरे। बहन अपने भाई के ललाट पर तिलक करती है कि 'मेरा भैया त्रिलोचन हो, ज्ञान के प्रकाश में जिये।'

बाहर तो दीपमाला कर लेते हैं,
कभी अंदर का दीपक भी जलाया करो।
घर को तो सजा दिया फूलों से,
कभी मन को भी बुहारी लगाया करो॥
मिल जाय जमाने भर की दौलत,
लोभी की गरीबी जाती नहीं।
नेक कमाई में होगी बरकत,
सत्कर्म में धन को लगाया करो॥

दीपावली को पर्वों की महारानी कहा जाता है, जो ५ दिनों तक आनंदोल्लास के साथ मनायी जाती है। शिष्यों की दृष्टि से यदि इस महापर्व में सद्गुरु के दर्शन-सान्निध्य व सत्संग से अंतर्ज्योति जलाने का सौभाग्य मिल जाय तो इसे महापर्व, परमात्म-पर्व भी कह सकते हैं।

अनुभव-प्रकाश

सफलताओं की वर्षा

मैंने पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा ली है और मैं मंत्र का नियमित जप करता हूँ। उसीका यह सुफल है कि मैंने आई.ए.एस. की परीक्षा में ११३वाँ स्थान प्राप्त किया है।

इससे पूर्व मैंने बी.कॉम. में पूरी युनिवर्सिटी में टॉप किया। 'गृह मंत्रालय, भारत सरकार' द्वारा आयोजित केन्द्रीय खुफिया अधिकारी परीक्षा में पूरे भारत के ४ लाख प्रतियोगियों में मैंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 'स्टेट बैंक ऑफ इंडिया' के 'प्रोबेशनरी अधिकारी' की परीक्षा में भी पूरे भारत में १२वाँ स्थान प्राप्त किया।

यह सब गुरुदेव की दासी (माया) की कृपा है, जो पूज्य बापूजी से प्राप्त दीक्षा के प्रभाव से स्वाभाविक ही अनुकूल हो जाती है। गुरुजी के श्रीचरणों में विनती है कि आपश्री की कृपा से अब मैं परम सत्य परमात्मा को पाने के मार्ग पर चल पड़ूँ।

- कुणाल अग्रवाल, एडिशनल एस.पी.,
दक्षिण २४ परगना, कोलकाता (प.बंगाल)

पल में छूटी गंदी आदत !

मुझे पिछले कुछ वर्षों से जर्दा-गुटखा खाने की गंदी आदत पड़ गयी थी। उससे छुटकारा पाने की कई बार कोशिश की परंतु हर बार नाकामयाब रहा। एक दिन मैंने दुकान का हिसाब करने के लिए आश्रम के स्टाल से एक रजिस्टर खरीदा। उसमें हम नौजवानों के लिए, जिन्हें जर्दा-गुटखा खाने की गंदी लत लगी है, पूज्य बापूजी का पावन संदेश छपा हुआ था। साथ ही इन्हें खाने से होनेवाले दुष्परिणामों के बारे में भी जानकारियाँ दी गयी थीं। मैंने उसे कई बार पढ़ा।

खुदा कसम ! आपको हकीकत सुनाता हूँ, उसी दिन से न जाने कैसे मेरी वह बुरी आदत हमेशा-हमेशा के लिए छूट गयी। मैं आश्चर्य में पड़ गया कि यह कैसा करिश्मा है! जिस आदत से छुटकारा पाने के लिए मैं वर्षों से परेशान था, वह एक ही पल में छूट गयी !

- अब्दुल नईम खान
पिपरिया, जि. होशंगाबाद (म.प्र.)

वास्तविक लाभ पाने का दिन : लाभपंचमी

लाभपंचमी : २३ अक्टूबर

(पूज्य बापूजी का पावन संदेश)

कार्तिक शुक्ल पंचमी 'लाभपंचमी' कहलाती है। इसे 'सौभाग्य पंचमी' भी कहते हैं। जैन लोग इसको 'ज्ञान पंचमी' कहते हैं। व्यापारी लोग अपने धंधे का मुहूर्त आदि लाभपंचमी को ही करते हैं। लाभपंचमी के दिन धर्मसम्मत जो भी धंधा शुरू किया जाता है उसमें बहुत-बहुत बरकत आती है। यह सब तो ठीक है लेकिन संतों-महापुरुषों के मार्गदर्शन-अनुसार चलने का निश्चय करके भगवद्भक्ति के प्रभाव से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन पाँचों विकारों के प्रभाव को खत्म करने का दिन है लाभपंचमी। महापुरुष कहते हैं :

दुनिया से ऐ मानव !
रिश्त-ए-उल्फत (प्रीति) को तोड़ दे।
जिसका है तू सनातन सपूत,
उसीसे नाता जोड़ दे॥

'मैं भगवान का हूँ, भगवान मेरे हैं' - इस प्रकार थोड़ा भगवद्चिंतन, भगवत्प्रार्थना, भगवद्स्तुति करके संसारी आकर्षणों से, विकारों से अपने को बचाने का संकल्प करो।

(१) लाभपंचमी के पाँच अमृतमय वचनों को याद रखो :

पहली बात : 'भगवान हमारे हैं, हम भगवान के हैं' - ऐसा मानने से भगवान में प्रीति पैदा होगी। 'शरीर, घर, संबंधी जन्म के पहले नहीं थे और मरने के बाद नहीं रहेंगे लेकिन परमात्मा मेरे साथ सदैव हैं' - ऐसा सोचने से आपको लाभपंचमी के पहले आचमन द्वारा अमृतपान का लाभ मिलेगा।
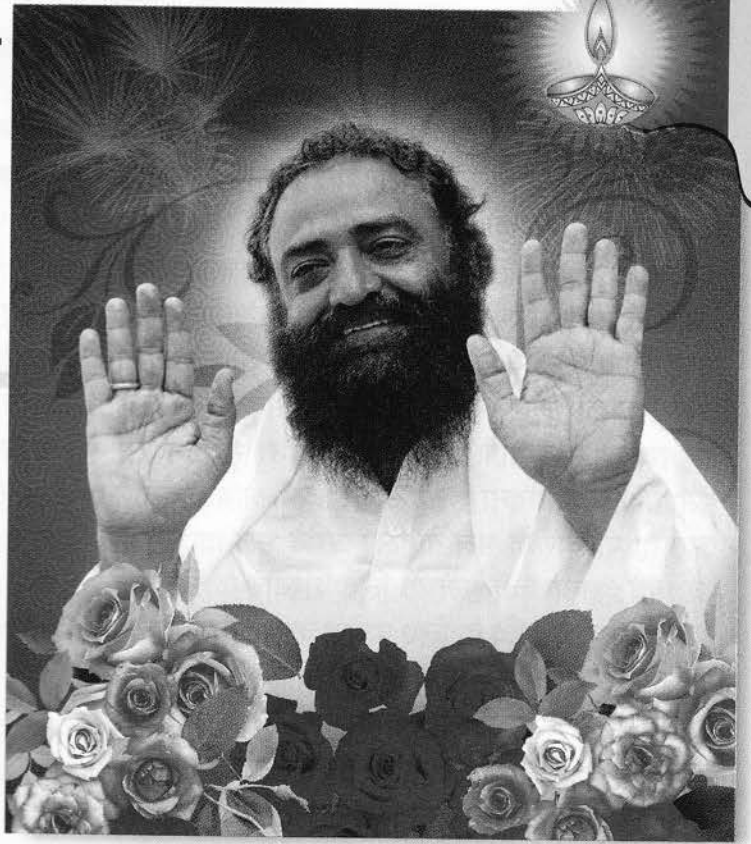
दूसरी बात : हम भगवान की सृष्टि में रहते हैं, भगवान की बनायी हुई दुनिया में रहते हैं। तीर्थभूमि में रहने से पुण्य मानते हैं तो जहाँ हम-आप रह रहे हैं वहाँ की भूमि भी तो भगवान की है; सूरज, चाँद, हवाएँ, श्वास, धड़कन सब-के-सब भगवान के हैं, तो हम तो भगवान की दुनिया में, भगवान के घर में रहते हैं। मगन निवास, अमथा निवास, गोकुल निवास ये सब निवास ऊपर-ऊपर से हैं लेकिन सब-के-सब भगवान के निवास में ही रहते हैं। यह सबको पक्का समझ लेना चाहिए। ऐसा करने से आपके अंतःकरण में भगवद्धाम में रहने का पुण्यभाव जगेगा।

तीसरी बात : आप जो कुछ भोजन करते हैं भगवान का सुमिरन करके, भगवान को मानसिक रूप से भोग लगाके करें। इससे आपका पेट तो भरेगा, हृदय भी भगवद्भाव से भर जायेगा।

चौथी बात : माता-पिता की, गरीब की, पड़ोसी की, जिस किसीकी सेवा करो तो 'यह बेचारा है... मैं इसकी सेवा करता हूँ... मैं नहीं होता तो इसका क्या

होता...' - ऐसा नहीं सोचो; भगवान के नाते सेवाकार्य कर लो और अपने को कर्ता मत मानो।

पाँचवीं बात : अपने तन-मन को, बुद्धि को विशाल बनाते जाओ। घर से, मोहल्ले से, गाँव से, राज्य से, राष्ट्र से भी आगे विश्व में अपनी मति को फैलाते जाओ और 'सबका मंगल, सबका भला हो, सबका कल्याण हो, सबको सुख-शांति मिले, **सर्वे भवन्तु सुखिनः...'** इस प्रकार की भावना करके अपने दिल को बड़ा बनाते जाओ। परिवार के भले के लिए अपने भले का आग्रह छोड़ दो, समाज के भले के लिए परिवार के हित का आग्रह छोड़ दो, गाँव के लिए पड़ोस का, राज्य के लिए गाँव का, राष्ट्र के लिए राज्य का, विश्व के लिए राष्ट्र का मोह छोड़ दो और विश्वेश्वर के साथ एकाकार होकर बदलनेवाले विश्व में सत्यबुद्धि तथा उसका आकर्षण और मोह छोड़ दो। तब ऐसी विशाल मति जगजीत प्रज्ञा की धनी बन जायेगी।

मन के कहने में चलने से लाभ तो क्या होगा हानि अवश्य होगी क्योंकि मन इन्द्रिय-अनुगामी है, विषय-सुख की ओर मति को ले जाता है। लेकिन मति को मतीश्वर के ध्यान से, स्मरण से पुष्ट बनाओगे तो वह परिणाम का विचार करेगी, मन के गलत आकर्षण से सहमत नहीं होगी। इससे मन को विश्रांति मिलेगी, मन भी शुद्ध-सात्त्विक होगा और मति को परमात्मा में प्रतिष्ठित होने का अवसर मिलेगा, परम मंगल हो जायेगा।

लाभपंचमी के ये पाँच लाभ अपने जीवन में ला दो।

(२) लाभपंचमी की दूसरी पाँच बातें :

१. अपने जीवन में कर्म अच्छे करना।

२. आहार शुद्ध करना।

३. मन को थोड़ा नियंत्रित करना कि इतनी देर जप में, ध्यान में बैठना है तो बैठना है, इतने मिनट मौन रहना है तो रहना है।

४. शत्रु और मित्र के भय का प्रसंग आये तो सतत जागृत रहना। मित्र नाराज न हो जाय, शत्रु ऐसा तो नहीं कर देगा इस भय को तुरंत हटा दो।

५. सत्य और असत्य के बीच के भेद को दृढ़ करो। शरीर मिथ्या है। शरीर सत् भी नहीं, असत् भी नहीं। असत् कभी नहीं होता और सत् कभी नहीं मिटता, मिथ्या हो-होके मिट जाता है। शरीर मिथ्या है, मैं आत्मा सत्य हूँ। सुख-दुःख, मान-अपमान, रोग-आरोग्य सब मिथ्या है लेकिन आत्मा-परमात्मा सत्य है। लाभपंचमी के दिन इसे समझकर सावधान हो जाना चाहिए।

(३) पाँच काम करने में कभी देर नहीं करनी चाहिए :

१. धर्म का कार्य करने में कभी देर मत करना।

२. सत्पात्र मिल जाय तो दान-पुण्य करने में देर नहीं करना।

३. सच्चे संत के सत्संग, सेवा आदि में देर मत करना।

४. सत्शास्त्रों का पठन, मनन, चिंतन तथा उसके अनुरूप आचरण करने में देर मत करना।

५. भय हो तो भय को मिटाने में देर मत करना। निर्भय नारायण का चिंतन करना और भय जिस कारण से होता है उस कारण को हटाना। यदि शत्रु सामने आ गया है, मृत्यु का भय है अथवा शत्रु जानलेवा कुछ करता है तो उससे बचने में अथवा उस पर वार करने में भय न करना। यह 'स्कंद पुराण' में लिखा है। तो विकार, चिंता, पाप-विचार ये सब भी शत्रु हैं, इनको किनारे लगाने में देर नहीं करनी चाहिए।

(४) पाँच कर्मदोषों से बचना चाहिए :

१. नासमझीपूर्वक कर्म करने से बचें, ठीक से समझकर फिर काम करें।

२. अभिमानपूर्वक कर्म करने से बचें।

३. रागपूर्वक अपने को कहीं फँसायें नहीं, किसीसे संबंध जोड़ें नहीं।

४. द्वेषपूर्ण बर्ताव करने से बचें।

५. भयभीत होकर कार्य करने से बचें। इन पाँच

सदैव ख्याल रखो कि सारा ब्रह्माण्ड एक शरीर है, सारा संसार एक शरीर है। जब तक आप हरेक से अपनी एकता का भान व अनुभव करते रहेंगे तब तक सभी परिस्थितियाँ और आसपास की चीजें, हवा और सागर की लहरें तक आपके पक्ष में रहेंगी।

दोषों से रहित तुम्हारे कर्म भी लाभपंचमी को पंचामृत हो जायेंगे।

(५) बुद्धि में पाँच बड़े भारी सद्गुण हैं, उनको समझकर उनसे लाभ उठाना चाहिए।

१. अशुभ वृत्तियों का नाश करने की, शुभ की रक्षा करने की ताकत बुद्धि में है।

२. चित्त को एकाग्र करने की शक्ति बुद्धि में है। श्वासोच्छ्वास की गिनती से, गुरुमूर्ति, ॐकार अथवा स्वस्तिक पर त्राटक करने से चित्त एकाग्र होता है और भगवान का रस भी आता है।

३. उत्साहपूर्वक कोई भी कार्य किया जाता है तो सफलता जरूर मिलती है।

४. अमुक कार्य करना है कि नहीं करना है, सत्य-असत्य, अच्छा-बुरा, हितकर-अहितकर इसका बुद्धि ही निर्णय करेगी, इसलिए बुद्धि को स्वच्छ रखना।

५. निश्चय करने की शक्ति भी बुद्धि में है। इसलिए बुद्धि को जितना पुष्ट बनायेंगे, उतना हर क्षेत्र में आप उन्नत हो जायेंगे।

तो बुद्धिप्रदाता भगवान सूर्यनारायण को प्रतिदिन अर्घ्य देना और उन्हें प्रार्थना करना कि 'मेरी बुद्धि में आपका निवास हो, आपका प्रकाश हो।' इस प्रकार करने से तुम्हारी बुद्धि में भगवद्सत्ता, भगवद्ज्ञान का प्रवेश हो जायेगा।

(६) लाभपंचमी को भगवान को पाने के पाँच उपाय भी समझ लेना :

१. 'मैं भगवान का हूँ, भगवान मेरे हैं। मुझे इसी जन्म में भगवत्प्राप्ति करनी है।'- यह भगवत्प्राप्ति का भाव जितनी मदद करता है, उतना तीव्र लाभ उपवास, व्रत, तीर्थ, यज्ञ से भी नहीं होता। और फिर भगवान के नाते सबकी सेवा करो।

२. भगवान के श्रीविग्रह को देखकर प्रार्थना करते-करते गद्गद होने से हृदय में भगवदाकार वृत्ति बनती है।

३. सुबह नींद से उठो तो एक हाथ तुम्हारा और एक प्रभु का मानकर बोलो : 'मेरे प्रभु ! मैं तुम्हारा हूँ और तुम मेरे हो... मेरे हो न... हो न...?' ऐसा करते हुए जरा एक-दूसरे का हाथ दबाओ और भगवान से वार्तालाप करो। पहले दिन नहीं तो दूसरे दिन, तीसरे दिन, पाँचवें, पंद्रहवें दिन अंतर्यामी परमात्मा तुम पर प्रसन्न हो जायेंगे और आवाज आयेगी कि 'हाँ भाई ! तू मेरा है।' बस, तुम्हारा तो काम हो गया !

४. गोपियों की तरह भगवान का हृदय में आवाहन, चिंतन करो और शबरी की तरह 'भगवान मुझे मिलेंगे' ऐसी दृढ़ निष्ठा रखो।

५. किसीके लिए अपने हृदय में द्वेष की गाँठ मत बाँधना, बाँधी हो तो लाभपंचमी के पाँच-पाँच अमृतमय उपदेश सुनकर वह गाँठ खोल देना।

जिसके लिए द्वेष है वह तो मिठाई खाता होगा, हम द्वेषबुद्धि से उसको याद करके अपना हृदय क्यों जलायें ! जहर जिस बोतल में होता है उसका नहीं बिगाड़ता लेकिन द्वेष तो जिस हृदय में होता है उस हृदय का ही सत्यानाश करता है। स्वार्थरहित सबका भला चाहें और सबके प्रति भगवान के नाते प्रेमभाव रखें। जैसे माँ बच्चे को प्रेम करती है तो उसका मंगल चाहती है, हित चाहती है और मंगल करने का अभिमान नहीं लाती, ऐसा ही अपने हृदय को बनाने से तुम्हारा हृदय भगवान का प्रेमपात्र बन जायेगा।

हृदय में दया रखनी चाहिए। अपने से छोटे लोग भूल करें तो दयालु होकर उनको समझायें, जिससे उनका पुण्य बढ़े, उनका ज्ञान बढ़े। जो दूसरों का पुण्य, ज्ञान बढ़ाते हुए हित करता है वह यशस्वी हो जाता है और उसका भी हित अपने-आप हो जाता है। लाभ-पंचमी के दिन इन बातों को पक्का कर लेना चाहिए।

धन, सत्ता, पद-प्रतिष्ठा मिल जाना वास्तविक लाभ नहीं है। वास्तविक लाभ तो जीवनदाता से मिलानेवाले सद्गुरु के सत्संग से जीवन जीने की कुंजी पाकर, उसके अनुसार चलके लाभ-हानि, यश-अपयश, विजय-पराजय सबमें सम रहते हुए आत्मस्वरूप में विश्रांति पाने में है।

सदैव ख्याल रखो कि सारा ब्रह्माण्ड एक शरीर है, सारा संसार एक शरीर है । जब तक आप हरेक से अपनी एकता का भान व अनुभव करते रहेंगे तब तक सभी परिस्थितियाँ और आसपास की चीजें, हवा और सागर की लहरें तक आपके पक्ष में रहेंगी ।

दोषों से रहित तुम्हारे कर्म भी लाभपंचमी को पंचामृत हो जायेंगे।

(५) बुद्धि में पाँच बड़े भारी सद्गुण हैं, उनको समझकर उनसे लाभ उठाना चाहिए।

१. अशुभ वृत्तियों का नाश करने की, शुभ की रक्षा करने की ताकत बुद्धि में है।

२. चित्त को एकाग्र करने की शक्ति बुद्धि में है । श्वासोच्छ्वास की गिनती से, गुरुमूर्ति, ॐकार अथवा स्वस्तिक पर त्राटक करने से चित्त एकाग्र होता है और भगवान का रस भी आता है।

३. उत्साहपूर्वक कोई भी कार्य किया जाता है तो सफलता जरूर मिलती है।

४. अमुक कार्य करना है कि नहीं करना है, सत्य-असत्य, अच्छा-बुरा, हितकर-अहितकर इसका बुद्धि ही निर्णय करेगी, इसलिए बुद्धि को स्वच्छ रखना।

५. निश्चय करने की शक्ति भी बुद्धि में है। इसलिए बुद्धि को जितना पुष्ट बनायेंगे, उतना हर क्षेत्र में आप उन्नत हो जायेंगे।

तो बुद्धिप्रदाता भगवान सूर्यनारायण को प्रतिदिन अर्घ्य देना और उन्हें प्रार्थना करना कि 'मेरी बुद्धि में आपका निवास हो, आपका प्रकाश हो ।' इस प्रकार करने से तुम्हारी बुद्धि में भगवद्सत्ता, भगवद्ज्ञान का प्रवेश हो जायेगा।

(६) लाभपंचमी को भगवान को पाने के पाँच उपाय भी समझ लेना :

१. 'मैं भगवान का हूँ, भगवान मेरे हैं । मुझे इसी जन्म में भगवत्प्राप्ति करनी है ।'- यह भगवत्प्राप्ति का भाव जितनी मदद करता है, उतना तीव्र लाभ उपवास, व्रत, तीर्थ, यज्ञ से भी नहीं होता। और फिर भगवान के नाते सबकी सेवा करो।

२. भगवान के श्रीविग्रह को देखकर प्रार्थना करते-करते गद्गद होने से हृदय में भगवदाकार वृत्ति बनती है।

३. सुबह नींद से उठो तो एक हाथ तुम्हारा और एक प्रभु का मानकर बोलो : 'मेरे प्रभु ! मैं तुम्हारा हूँ और तुम मेरे हो... मेरे हो न... हो न...?' ऐसा करते हुए जरा एक-दूसरे का हाथ दबाओ और भगवान से वार्तालाप करो। पहले दिन नहीं तो दूसरे दिन, तीसरे दिन, पाँचवें, पंद्रहवें दिन अंतर्यामी परमात्मा तुम पर प्रसन्न हो जायेंगे और आवाज आयेगी कि 'हाँ भाई ! तू मेरा है ।' बस, तुम्हारा तो काम हो गया !

४. गोपियों की तरह भगवान का हृदय में आवाहन, चिंतन करो और शबरी की तरह 'भगवान मुझे मिलेंगे' ऐसी दृढ़ निष्ठा रखो।

५. किसीके लिए अपने हृदय में द्वेष की गाँठ मत बाँधना, बाँधी हो तो लाभपंचमी के पाँच-पाँच अमृतमय उपदेश सुनकर वह गाँठ खोल देना।

जिसके लिए द्वेष है वह तो मिठाई खाता होगा, हम द्वेषबुद्धि से उसको याद करके अपना हृदय क्यों जलायें ! जहर जिस बोतल में होता है उसका नहीं बिगाड़ता लेकिन द्वेष तो जिस हृदय में होता है उस हृदय का ही सत्यानाश करता है। स्वार्थरहित सबका भला चाहें और सबके प्रति भगवान के नाते प्रेमभाव रखें। जैसे माँ बच्चे को प्रेम करती है तो उसका मंगल चाहती है, हित चाहती है और मंगल करने का अभिमान नहीं लाती, ऐसा ही अपने हृदय को बनाने से तुम्हारा हृदय भगवान का प्रेमपात्र बन जायेगा।

हृदय में दया रखनी चाहिए। अपने से छोटे लोग भूल करें तो दयालु होकर उनको समझायें, जिससे उनका पुण्य बढ़े, उनका ज्ञान बढ़े। जो दूसरों का पुण्य, ज्ञान बढ़ाते हुए हित करता है वह यशस्वी हो जाता है और उसका भी हित अपने-आप हो जाता है । लाभ-पंचमी के दिन इन बातों को पक्का कर लेना चाहिए।

धन, सत्ता, पद-प्रतिष्ठा मिल जाना वास्तविक लाभ नहीं है । वास्तविक लाभ तो जीवनदाता से मिलानेवाले सद्गुरु के सत्संग से जीवन जीने की कुंजी पाकर, उसके अनुसार चलके लाभ-हानि, यश-अपयश, विजय-पराजय सबमें सम रहते हुए आत्मस्वरूप में विश्रांति पाने में है।

माँ महँगीबा की मधुर विरह-व्यथा

ब्रह्मलीन मातुश्री श्री माँ महँगीबा
महानिर्वाण-दिवस : १४ अक्टूबर

माता देवहूति ने अपने पुत्र कपिल मुनि में भगवद्बुद्धि करके परम पद पाया था। माता देवहूति की कपिल मुनि में जैसी भगवद्बुद्धि थी ऐसी ही परम पूजनीया माँ महँगीबा की पूज्य बापूजी में दृढ़ श्रद्धा एवं अनोखी गुरुभक्ति थी। वे अपनी सरल व निर्दोष भक्ति के कारण अक्सर बापूजी का प्रेम और ज्ञान सम्पादन कर लिया करती थीं।

जब माँ महँगीबा, जिन्हें सब प्रेम से अम्मा कहकर पुकारते हैं, हिम्मतनगर आश्रम में रहती थीं, उन दिनों पूज्य बापूजी भी एकांतवास के दौरान वहाँ पधारे हुए थे। बापूजी जब घूमकर आते तो प्रायः अम्मा से मिलकर ही कुटिया में वापस जाते थे। अम्मा भी दर्शन के लिए व्याकुल रहतीं, पहले से ही कुर्सी तैयार रखवाती थीं और कभी आगे से तो कभी पीछे मुड़कर आवाज लगातीं : 'ओ दयालु प्रभु ! थोड़ी देर तो बैठो।'

पूज्य बापूजी को हिम्मतनगर से हरिद्वार के लिए जाना था। वैसे तो वे कहीं भी जाते तो अम्मा को प्रणाम करके ही जाते थे परंतु उन दिनों अम्मा की गुरुदर्शन की तड़प इतनी बढ़ गयी थी कि यदि एक दिन भी बापूजी के दर्शन नहीं होते तो व्याकुल हो जाती थीं। इसलिए इस बार बापूजी अम्मा से मिले बिना ही चले गये कि अम्मा को पता चला तो बहुत दुःख होगा।

पूज्य बापूजी के हरिद्वार प्रस्थान के बाद भी अम्मा को नित्यप्रति बापूजी के साक्षात् दर्शन होते थे। कभी बापूजी उन्हें गुदगुदी करते, कभी **'हरि हरि बोल...'** बुलवाते हुए हाथ ऊँचे करवाके हँसाते। सेविका को बापूजी के दर्शन नहीं होते थे सिर्फ अम्मा की क्रियाएँ ही दिखती थीं। इन्हीं मधुर अठखेलियों में एक दिन अम्मा ने देखा कि बापूजी चक्कर लगाके उन्हें मिले बिना ही जा रहे हैं। 'तो क्या वे मुझसे रूठ गये हैं ?' - ऐसा सोचकर अम्मा विरह-व्यथा से बेचैन हो गयीं।
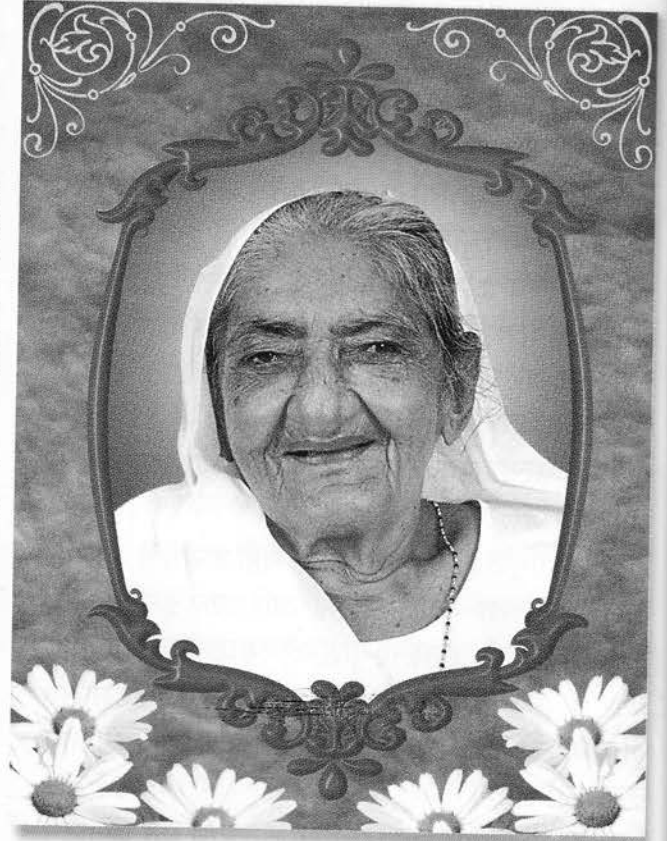
इस तरह विरह-विरह में एक दिन, दो दिन बीते... अम्मा पुकारने लगीं : ''मेरे शाहों के शाह ! मेरे दयालु ! मेरे बाबा ! मेरे पुत्र !... सामने कुटिया में बैठे हो और दर्शन नहीं देते ! मुझसे क्यों बिछड़ गये हो ? मुझसे क्यों दूर हो गये हो ?''

तीसरे दिन खूब उदास हो गयीं और बोलने लगीं : ''बापूजी तो कहते हैं कि ओ मेरी प्यारी माँ ! तुम कहीं भी होगी, मैं तुम्हें ढूँढ़ निकालूँगा। फिर क्यों नहीं आते हो ?''

अब अम्मा अत्यधिक रोने लगीं। उनकी विरह-व्यथा अब सीमा-पार हो रही थी।

अम्मा कहने लगीं : ''आज-ही-आज मुझे साँईं के पास ले चलो अथवा साँईं को यहाँ बुलाओ, नहीं तो मैं मर जाऊँगी।''

अंतर्यामी पूज्य बापूजी से कहाँ बेखबर थी भक्त की पुकार। अम्मा अभी तो बोल ही रही थीं कि इतने में फोन

द्वारा पूज्य बापूजी का संदेश मिला कि अम्मा हिम्मतनगर से अमदावाद के लिए निकलें, साँईं हरिद्वार से अमदावाद के लिए निकल रहे हैं। सच ही तो कहा है :

सच्चे हृदय की प्रार्थना, जब भक्त सच्चा गाय है।
भक्तवत्सल के कान में, पहुँच झट ही जाय है ॥

अमदावाद में साँईं के दर्शन करके अम्मा भावविभोर हो गयीं : ''कुर्बान जाऊँ... बलिहार जाऊँ... आज आप आ गये, नहीं तो क्या होता ! मैं सुबह से रो रही थी।''

बापूजी : ''मेरे मन में भी हुआ कि अम्मा बहुत याद कर रही है। मैंने फोन करवाया तो पता लगा कि मेरी माँ बहुत रो रही है। मैं उसी समय वहाँ से निकला और यहाँ पहुँच गया।''

फिर अम्मा साँईं का हाथ पकड़कर पूछने लगीं : ''आपका नाम क्या है ?''

साँईं : ''आसाराम।''

अम्मा : ''नहीं।''

साँईं : ''आसू।''

अम्मा : ''नहीं।''

साँईं : ''हँसमुख।'' (पूज्यश्री के बचपन के नाम)

अम्मा : ''नहीं। देखो तो, मैं आपका नाम भी भूल गयी क्या ? मैंने आज कितने नामों से पुकारा पर आप आये नहीं । अब आप ही कहो कि कौन-से नाम से पुकारूँ तो आप आओगे ?''

अम्मा के प्रेम की गहराई देखकर पूज्य बापूजी का हृदय उनके लिए छलक गया, मानों वे अपना ब्रह्मज्ञान का खजाना लुटाने लगे, उछलकर बोले : ''मैं भी ब्रह्म हूँ और अम्मा भी ब्रह्म है।''

अम्मा : ''हाँ...।''

धन्य था अम्मा का उत्कट प्रेम ! जिसके द्वारा उन्होंने हँसते-खेलते ब्रह्मज्ञान पा लिया !

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''मुझसे भी आगे का काम मेरी माता ने कर दिखाया। लाखों वर्षों के बाद इतिहास ने मुझ पर मेहरबानी की... नहीं-नहीं, बल्कि इतिहास रचनेवाली मेरी माँ ने मुझ पर मेहरबानी की कि मुझे गुरु के रूप में निहारा । मैं तो उन्हें भुलावे में डालता था लेकिन वे भुलावे में नहीं पड़ीं।

मुझे इस बात का संतोष है कि ऐसी तपस्विनी, करुणामयी माता की कोख से यह शरीर पैदा हुआ और आखिरी दिनों में मैं उनकी सेवा करके उनके ऋण से थोड़ा उऋण हो पाया।''

शुद्ध प्रायश्चित्त

महात्मा गाँधीजी के बचपन की घटना है। एक बार गाँधीजी के भाई पर पचीस रुपये का कर्जा हो गया था। उनके भाई ने हाथ में सोने का कड़ा पहना था। दोनों भाइयों ने मिलकर उस कड़े में से एक तोला सोना बेचकर कर्ज चुका दिया। इस महान गलती में गाँधीजी शामिल थे इसलिए यह घटना उनके लिए असह्य हो गयी। वे किसी भी तरह उसे छिपाने की शक्ति अपने में नहीं जुटा पा रहे थे । अंत में उन्होंने अपने पिताजी के सामने गलती स्वीकार करने का निश्चय किया। तुरंत पिताजी के नाम एक पत्र लिखा, जिसमें अपने सारे दोष ईमानदारी से स्वीकार किये, उनके लिए सजा की माँग की और फिर कभी ऐसा न करने की प्रतिज्ञा की। स्वयं उस पत्र को ले जाकर पिताजी को दिया और उनके सामने सिर झुकाकर अपराधी की तरह बैठ गये।

पिताजी ने चिट्ठी पढ़ी। आँखों से आँसुओं की बूँदें टपकने लगीं। चिट्ठी भीग गयी। थोड़ी देर के लिए उन्होंने आँखें मूँद लीं। चिट्ठी फाड़ दी और पुनः लेट गये। पिताजी की प्रतिक्रिया देखकर गाँधीजी भी बहुत देर तक रोते रहे। इन अश्रुबिंदुओं के प्रेमबाण ने मानों उनका हृदय छेद डाला। इस तरह उनको एक नया जीवनसूत्र मिला : **'जो मनुष्य अधिकारी व्यक्ति के सामने अपना दोष शुद्ध हृदय से कह देता है और फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा करता है, वह मानों शुद्ध प्रायश्चित्त करता है।'**

चमत्कार का रहस्य

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)
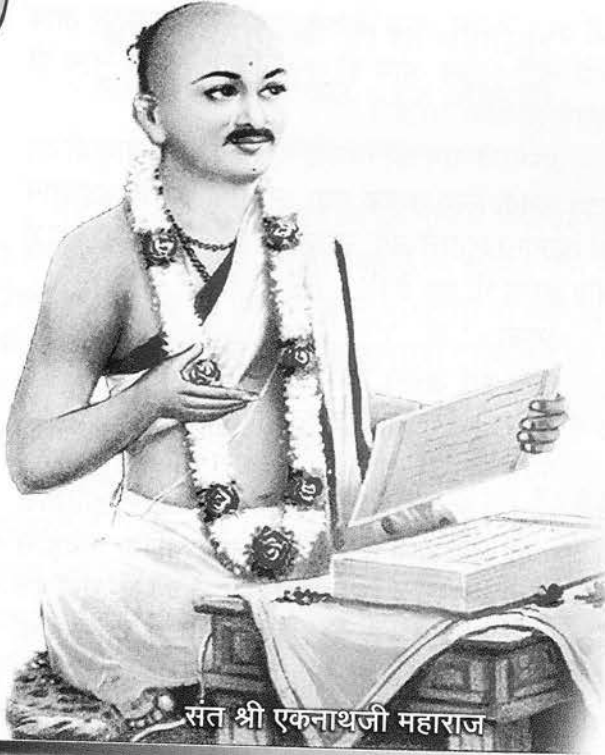
संत श्री एकनाथजी महाराज

संत एकनाथजी महाराज के पास एक बड़े अद्भुत दण्डी संन्यासी आया करते थे। एकनाथजी उन्हें बहुत प्यार करते थे। वे संन्यासी यह मंत्र जानते थे :

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ शांतिः ! शांतिः !! शांतिः !!!

और इसको ठीक से पचा चुके थे। वे पूर्ण का दर्शन करते थे सबमें। कोई भी मिल जाय तो मानसिक प्रणाम कर लेते थे। कभी बाहर से भी दण्डवत् कर लेते थे।

एक बार वे दण्डी संन्यासी बाजार से गुजर रहे थे। रास्ते में कोई गधा मरा हुआ पड़ा था। 'अरे, क्या हुआ ? कैसे मर गया ?'- इस प्रकार की कानाफूसी करते हुए लोग इकट्ठे हो गये। दण्डी संन्यासी की नजर भी मरे हुए गधे पर पड़ी। वे आ गये अपने संन्यासीपने में। 'हे चेतन ! तू सर्वव्यापक है। हे परमात्मा ! तू सबमें बस रहा है।'- इस भाव में आकर संन्यासी ने उस गधे को दण्डवत् प्रणाम किये। गधा जिंदा हो गया ! अब इस चमत्कार की बात चारों ओर फैल गयी तो लोग दण्डी संन्यासी के दर्शन हेतु पीछे लग गये। दण्डी संन्यासी एकनाथजी के पास पहुँचे। उनके दिल में एकनाथजी के लिए बड़ा आदर था। उन्होंने एकनाथजी को प्रार्थना की : ''...अब लोग मुझे तंग कर रहे हैं।''

एकनाथजी बोले : ''फिर आपने गधे को जिंदा क्यों किया ? करामात करके क्यों दिखायी ?''

संन्यासी ने कहा : ''मैंने करामात दिखाने का सोचा भी नहीं था। मैंने तो **सबमें एक और एक में सब** - इस भाव से दण्डवत् किया था। मैंने तो बस मंत्र दोहरा लिया कि 'हे सर्वव्यापक चैतन्य परमात्मा ! तुझे प्रणाम हैं।' मुझे भी पता नहीं कि गधा कैसे जिंदा हो गया !''

जब पता होता है तो कुछ नहीं होता, जब तुम खो जाते हो तभी कुछ होता है। किसी मरे हुए गधे को जिंदा करना, किसीके मृत बेटे को जिंदा करना - यह सब किया नहीं जाता, हो जाता है। जब अनजाने में चैतन्य-तत्त्व के साथ एक हो जाते हैं तो वह कार्य फिर परमात्मा करते हैं। इसी प्रकार संन्यासी अपने चैतन्य के साथ एकाकार हो गये तो वह चमत्कार परमात्मा ने कर दिया, संन्यासी ने वह कार्य नहीं किया।

लोग कहते हैं : 'आसाराम बापूजी ने ऐसा-ऐसा चमत्कार कर दिया।' अरे, आसाराम बापू नहीं करते, जब हम इस वैदिक मंत्र के साथ एकाकार होकर उसके अर्थ में खो जाते हैं तो परमात्मा हमारा कार्य कर देते हैं और तुमको लगता है कि बापूजी ने किया। यदि कोई व्यक्ति या साधु-संत ऐसा कहे कि यह मैंने किया है तो समझना कि या तो वह देहलोलुप है या अज्ञानी है। सच्चे संत कभी कुछ नहीं करते।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : 'ज्ञानी की दृष्टि उस तत्त्व पर है इसीलिए वे तत्त्व को सार और सत्य समझते हैं। तत्त्व की सत्ता से जो हो रहा है उसे वे खेल समझते हैं।'

हर मनुष्य अपनी-अपनी दृष्टि से जीता है। संन्यासी की दृष्टि ऐसी परिपक्व हो गयी थी कि गधे में चैतन्य आत्मा देखा तो वास्तव में उसके शरीर में चैतन्य आत्मा आ गया और वह जिंदा हो गया। तुम अपनी दृष्टि को ऐसी ज्ञानमयी होने दो तो फिर सारा जगत तुम्हारे लिए आत्ममय हो जायेगा।

शरीर स्वास्थ्य

दिव्य औषधि : पंचगव्य

गोमूत्र, गोबर का रस, गोदुग्ध, गोदधि व गोघृत का निश्चित अनुपात में मिश्रण 'पंचगव्य' कहलाता है। जैसे पृथ्वी, जल, तेज आदि पंचमहाभूत सृष्टि का आधार हैं, वैसे ही स्वस्थ, सुखी व सुसम्पन्न जीवन का आधार गौ-प्रदत्त ये पाँच अनमोल द्रव्य हैं। पंचगव्य मनुष्य के शरीर को शुद्ध कर स्वस्थ, सात्त्विक व बलवान बनाता है। इसके सेवन से तन-मन-बुद्धि के विकार दूर होकर आयुष्य, बल और तेज की वृद्धि होती है।

गव्यं पवित्रं च रसायनं च पथ्यं च हृद्यं बलबुद्धिदंस्यात्।
आयुं प्रदं रक्तविकारहारि त्रिदोष हृद्रोगविषापहं स्यात्॥

अर्थात् पंचगव्य परम पवित्र रसायन है, पथ्यकर है। हृदय को आनंद देनेवाला तथा आयु-बल-बुद्धि प्रदान करनेवाला है। यह त्रिदोषों का शमन करनेवाला, रक्त के समस्त विकारों को दूर करनेवाला, हृदयरोग एवं विष के प्रभाव को दूर करनेवाला है।

इसके द्वारा कायिक, वाचिक, मानसिक आदि पाप-संताप दूर हो जाते हैं।

पंचगव्यं प्राशनं महापातकनाशनम्। (महाभारत)

सभी प्रकार के प्रायश्चित्तों में, धार्मिक कृत्यों व यज्ञों में पंचगव्य-प्राशन का विधान है। वेदों, पुराणों एवं धर्मशास्त्रों में पंचगव्य की निर्माण-विधि एवं सेवन-विधि का वर्णन आता है। पंचगव्य शास्त्रोक्त रीति से अत्यंत शुचिता, पवित्रता व मंत्रोच्चारण के साथ बनाया जाता है।

पंचगव्य निर्माण-विधि :

धर्मशास्त्रों में प्रसिद्ध ग्रंथ 'धर्मसिंधु' के अनुसार पंचगव्य के पाँचों द्रव्यों का अनुपात इस प्रकार है :-

गोघृत - ८ भाग, गोदुग्ध - १ भाग, गोदधि - १० भाग, गोमूत्र - ८ भाग, गोबर का रस - १ भाग और कुशोदक - ४ भाग।

'बोधायन स्मृति' में इन पाँच द्रव्यों का अनुपात इस प्रकार है :-

गोघृत - १ भाग, गोदधि - २ भाग, गोबर का रस - आधा भाग, गोमूत्र - १ भाग, दूध - ३ भाग और कुशोदक - १ भाग।

८० वर्ष के एक अनुभवी वैद्य के अनुसार द्रव्यों का अनुपात :-

गोझरण - २० भाग, गोघृत - ढाई भाग, गोदुग्ध - १० भाग, गोबर का रस - डेढ़ भाग व गोदधि - ५ भाग।

विशेष ध्यान देने योग्य बातें :-

१. उपर्युक्त द्रव्य देशी नस्ल की स्वस्थ गाय के होने चाहिए।

२. गोबर को ज्यों-का-त्यों मिश्रण में नहीं डालना चाहिए बल्कि उसकी जगह गोबर के रस का उपयोग करें।

ताजे गोबर में सूती कपड़ा दबाकर रखें। कुछ समय बाद उसे निकालकर निचोड़ने से गोबर का रस अर्थात् गोमय रस प्राप्त होता है।

३. कुश (डाभ) का पंचांग एक दिन तक गंगाजल में डुबाकर रखने से कुशोदक बन जाता है।

गोमूत्र के अधिष्ठातृ देवता वरुण, गोबर के अग्नि, दूध के सोम, दही के वायु, घृत के सूर्य और कुशोदक के देवता विष्णु माने गये हैं। इन सभी द्रव्यों को एकत्र करने तथा पंचगव्य का पान करने आदि के भिन्न-भिन्न मंत्र शास्त्रों में बताये गये हैं। इन सभी द्रव्यों को एक ही पात्र में डालते समय निम्नलिखित श्लोकों का तीन बार उच्चारण करें -

गोमूत्र

गोमूत्रं सर्वशुद्ध्यर्थं पवित्रं पापशोधनम्।
आपदो हरते नित्यं पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्॥

गोमय

अग्रमग्रश्चरन्तीनां औषधीनां रसोद्भवम्।
तासां वृषभपत्नीनां पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्॥

गोदुग्ध

पयः पुण्यतमं प्रोक्तं धेनुभ्यश्च समुद्भवम्।
सर्वशुद्धिकरं दिव्यं पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्॥

गोदधि

चन्द्रकुन्दसमं शीतं स्वच्छं वारिविवर्जितम्।
किंचिदाम्लरसालं च क्षिपेत् पात्रे च सुन्दरम्॥

दिव्य औषधि : पंचगव्य

गोघृत

इदं घृतं महद्दिव्यं पवित्रं पापशोधनम् ।
सर्वपुष्टिकरं चैव पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम् ।।

कुशोदक

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः ।
कुशाग्रे शंकरो देवस्तेन युक्तं करोम्यहम् ।।

सर्वप्रथम उपरोक्त द्रव्यों से संबंधित मंत्रों का उच्चारण करते हुए सभीको एकत्र करें । बाद में प्रणव (ॐ) के उच्चारण के साथ कुश से हिलाते हुए उनको मिश्रित करें।

सेवन-विधि : पंचगव्य सुवर्ण अथवा चाँदी के पात्र में या पलाश-पत्र के दोने में लेकर निम्न मंत्र के तीन बार उच्चारण के पश्चात् खाली पेट सेवन करना चाहिए।

यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम् ।।

अर्थात् त्वचा, मज्जा, मेधा, रक्त और हड्डियों तक जो पाप मुझमें प्रविष्ट हो गये हैं, वे सब मेरे इस पंचगव्य-प्राशन से वैसे ही नष्ट हो जायें, जैसे प्रज्वलित अग्नि में सूखी लकड़ी डालने पर भस्म हो जाती है। **(महाभारत)**

पंचगव्य-सेवन की मात्रा : बच्चों के लिए १० ग्राम और बड़ों के लिए २० ग्राम । पंचगव्य-सेवन के पश्चात् कम-से-कम ३ घंटे तक कुछ भी न खायें।

पंचगव्य के नियमित सेवन से मानसिक व्याधियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं । विषैली औषधियों के सेवन से तथा लम्बी बीमारी से शरीर में संचित हुए विष का प्रभाव भी निश्चितरूप से नष्ट हो जाता है । गोमाता से प्राप्त होनेवाला, अल्प प्रयास और अल्प खर्च में मानव-जीवन को सुरक्षित बनानेवाला यह अद्भुत रसायन है।

पंचगव्य घृत

गौ-प्रदत्त उपरोक्त पाँचों द्रव्यों को समान मात्रा में मिलाकर तत्पश्चात् अग्नि पर पकाकर 'पंचगव्य घृत' बनाया जाता है । इसका उपयोग विशेषतः मानसिक विकारों में किया जाता है । इसके नियमित सेवन से मनोदैन्य, मनोविभ्रम, मानसिक अवसाद (डिप्रेशन) आदि लक्षण तथा उन्माद, अपस्मार आदि मानसिक व्याधियाँ धीरे-धीरे दूर होने लगती हैं।

बनाने की विधि : गोमूत्र, गोबर का रस, दूध, दही तथा घी समान मात्रा में लें । कढ़ाई में पहले घी गर्म करें । गर्म घी में क्रमशः गोबर का रस, दही, गोमूत्र व अंत में दूध डालें । कलछी से मिश्रण को हिलाते हुए धीमी आँच पर घी पकायें । घृत सिद्ध होने पर छानकर काँच अथवा चीनी मिट्टी के बर्तन में भरकर रखें।

सिद्ध घृत का परीक्षण : घी सिद्ध होने पर घृत में उत्पन्न बुलबुलों का आकार छोटा होने लगता है । ऊपर का झाग शांत होने लगता है । कल्क (गाढ़ा अवशेष) नीचे जमा हो जाता है व ऊपर स्वच्छ घी मात्र शेष रहता है।

कढ़ाई में नीचे जमा कल्क अग्नि में डालते ही बिना आवाज किये जलने लगे तो घृत सिद्ध हो चुका है, ऐसा समझना चाहिए।

मात्रा : १० से १५ ग्राम घी सुबह खाली पेट गुनगुने पानी से लें।

इसके स्निग्ध व शीत गुणों से मस्तिष्क के उपद्रव शांत हो जाते हैं । स्नायु व नाड़ियों में बल आने लगता है । यह क्षय, श्वास (दमा), खाँसी, धातुक्षीणता, पाण्डु, जीर्णज्वर, कामला आदि व्याधियों में भी उपयुक्त है । पेट, वृषण (अण्डकोश) तथा हाथ-पैरों की सूजन में यह बहुत ही लाभदायी है । रोगी तथा निरोगी, सभी इसका सेवन कर स्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की प्राप्ति कर सकते हैं।

विधिवत् पंचगव्य घृत बनाना सबके लिए सम्भव न हो पाने के कारण 'साँईं श्री लीलाशाहजी उपचार केन्द्र, सूरत' के साधकों ने यह शरीरशोधक, बलवर्धक, पापनाशक सिद्ध गोघृत बनाना शुरू किया है।

घर पर इसे बनाते समय विधिवत् बनाने की सावधानी बरतें । दीर्घ, निरोग और प्रसन्न जीवन के लिए गोघृत वरदानस्वरूप है।

'ऋषि प्रसाद' अंक २००, अगस्त २००९ में दिये गये 'स्वाध्याय' के उत्तर : (१) अहंकार (२) सेवा-प्रेम-त्याग (३) नारायण-स्वरूप (४) प्रेम (५) वासना और अहंकार (६) संतजनों (७) शुद्धि (८) आध्यात्मिक (९) आत्म (१०) शास्त्र

दिव्य औषधि : पंचगव्य

गोघृत

इदं घृतं महद्दिव्यं पवित्रं पापशोधनम् ।
सर्वपुष्टिकरं चैव पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम् ॥

कुशोदक

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः ।
कुशाग्रे शंकरो देवस्तेन युक्तं करोम्यहम् ॥

सर्वप्रथम उपरोक्त द्रव्यों से संबंधित मंत्रों का उच्चारण करते हुए सभीको एकत्र करें । बाद में प्रणव (ॐ) के उच्चारण के साथ कुश से हिलाते हुए उनको मिश्रित करें।

सेवन-विधि : पंचगव्य सुवर्ण अथवा चाँदी के पात्र में या पलाश-पत्र के दोने में लेकर निम्न मंत्र के तीन बार उच्चारण के पश्चात् खाली पेट सेवन करना चाहिए।

यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम् ॥

अर्थात् त्वचा, मज्जा, मेधा, रक्त और हड्डियों तक जो पाप मुझमें प्रविष्ट हो गये हैं, वे सब मेरे इस पंचगव्य-प्राशन से वैसे ही नष्ट हो जायें, जैसे प्रज्वलित अग्नि में सूखी लकड़ी डालने पर भस्म हो जाती है। **(महाभारत)**

पंचगव्य-सेवन की मात्रा : बच्चों के लिए १० ग्राम और बड़ों के लिए २० ग्राम । पंचगव्य-सेवन के पश्चात् कम-से-कम ३ घंटे तक कुछ भी न खायें।

पंचगव्य के नियमित सेवन से मानसिक व्याधियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं । विषैली औषधियों के सेवन से तथा लम्बी बीमारी से शरीर में संचित हुए विष का प्रभाव भी निश्चितरूप से नष्ट हो जाता है । गोमाता से प्राप्त होनेवाला, अल्प प्रयास और अल्प खर्च में मानव-जीवन को सुरक्षित बनानेवाला यह अद्भुत रसायन है।

पंचगव्य घृत

गौ-प्रदत्त उपरोक्त पाँचों द्रव्यों को समान मात्रा में मिलाकर तत्पश्चात् अग्नि पर पकाकर 'पंचगव्य घृत' बनाया जाता है । इसका उपयोग विशेषतः मानसिक विकारों में किया जाता है । इसके नियमित सेवन से मनोदैन्य, मनोविभ्रम, मानसिक अवसाद (डिप्रेशन) आदि लक्षण तथा उन्माद, अपस्मार आदि मानसिक व्याधियाँ धीरे-धीरे दूर होने लगती हैं।

बनाने की विधि : गोमूत्र, गोबर का रस, दूध, दही तथा घी समान मात्रा में लें । कढ़ाई में पहले घी गर्म करें। गर्म घी में क्रमशः गोबर का रस, दही, गोमूत्र व अंत में दूध डालें । कलछी से मिश्रण को हिलाते हुए धीमी आँच पर घी पकायें । घृत सिद्ध होने पर छानकर काँच अथवा चीनी मिट्टी के बर्तन में भरकर रखें।

सिद्ध घृत का परीक्षण : घी सिद्ध होने पर घृत में उत्पन्न बुलबुलों का आकार छोटा होने लगता है । ऊपर का झाग शांत होने लगता है । कल्क (गाढ़ा अवशेष) नीचे जमा हो जाता है व ऊपर स्वच्छ घी मात्र शेष रहता है।

कढ़ाई में नीचे जमा कल्क अग्नि में डालते ही बिना आवाज किये जलने लगे तो घृत सिद्ध हो चुका है, ऐसा समझना चाहिए।

मात्रा : १० से १५ ग्राम घी सुबह खाली पेट गुनगुने पानी से लें।

इसके स्निग्ध व शीत गुणों से मस्तिष्क के उपद्रव शांत हो जाते हैं । स्नायु व नाड़ियों में बल आने लगता है । यह क्षय, श्वास (दमा), खाँसी, धातुक्षीणता, पाण्डु, जीर्णज्वर, कामला आदि व्याधियों में भी उपयुक्त है । पेट, वृषण (अण्डकोश) तथा हाथ-पैरों की सूजन में यह बहुत ही लाभदायी है । रोगी तथा निरोगी, सभी इसका सेवन कर स्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की प्राप्ति कर सकते हैं।

विधिवत् पंचगव्य घृत बनाना सबके लिए सम्भव न हो पाने के कारण 'साँईं श्री लीलाशाहजी उपचार केन्द्र, सूरत' के साधकों ने यह शरीरशोधक, बलवर्धक, पापनाशक सिद्ध गोघृत बनाना शुरू किया है।

घर पर इसे बनाते समय विधिवत् बनाने की सावधानी बरतें । दीर्घ, निरोग और प्रसन्न जीवन के लिए गोघृत वरदानस्वरूप है।

'ऋषि प्रसाद' अंक २००, अगस्त २००९ में दिये गये 'स्वाध्याय' के उत्तर : (१) अहंकार (२) सेवा-प्रेम-त्याग (३) नारायण-स्वरूप (४) प्रेम (५) वासना और अहंकार (६) संतजनों (७) शुद्धि (८) आध्यात्मिक (९) आत्म (१०) शास्त्र

संस्था समाचार

पूज्य बापूजी लोकहितार्थ अविरत परिभ्रमण करते हुए, देश के कोने-कोने को भगवन्नाम, भगवद्ज्ञान व भगवत्शांति से परिपूर्ण करते हुए सनातन संस्कृति का परचम फहरा रहे हैं । पूज्यश्री के मुखारविंद से निःसृत अनुभवसम्पन्न योगवाणी से कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश का कोना-कोना पावन हो रहा है। इसी कड़ी में जम्मू से लेकर हैदराबाद तक पूज्यश्री की उपस्थिति ने लाखों सत्संगियों के दिलों को अभिभूत किया।

२८ से ३० अगस्त (दोपहर) तक **जम्मू** में आयोजित सत्संग में भगवत्प्रसाद से भरपूर पूज्यश्री की अमृतवाणी से जम्मूवासी सराबोर हुए । **३० अगस्त** को जम्मूवासियों को विदाई देकर पूज्यश्री **बिशनाह, ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर)** के दर्शनार्थियों की सत्संग-पिपासा को शांत करते हुए **घगवाल (जम्मू-कश्मीर)** पहुँचे । **३१ अगस्त व १ सितम्बर** को **घगवाल** में सत्संग हुआ।

१ सितम्बर को ही **टपियाल, साम्बा, धमयाल (जम्मू-कश्मीर)** के श्रद्धालुओं को दर्शन-सत्संग अमृत से तृप्त करते हुए पूज्यश्री **पठानकोट (पंजाब)** पहुँचे। वहाँ के आश्रम में भक्तों की अपार भीड़ ने बापूजी का स्वागत किया व अनायास ही पूज्यश्री के सत्संगामृत का लाभ उन्हें मिला। समाज में भगवान एवं धर्म के प्रति आस्था को सामाजिक दृष्टिकोण से आवश्यक बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''जो भगवान को मानते हैं, वे भगवान के विधान को भी मानते हैं, धर्म को भी मानते हैं। जो धर्म और भगवान को मानते हैं, वे सरकार के विधान को भी अच्छी तरह से निभा लेते हैं। तो आस्तिक लोग, धर्मात्मा लोग सरकार के लिए भी आशीर्वादरूप हैं, सुखदायी हैं।''

२ सितम्बर का दिन **अमृतसर (पंजाब)** के भक्तों के लिए स्वर्णावसर लेकर आया, जब दोपहर के सत्र का सत्संग अचानक अमृतसर में घोषित किया गया । बस, खबर वायुवेग से फैल गयी और अपने प्यारे सद्गुरु के दीदार के लिए बड़ी संख्या में गुरुमुख साधक आश्रम में उमड़ पड़े।

३ व ४ सितम्बर को **अमदावाद** में पूर्णिमा-दर्शन कार्यक्रम हुआ । विश्वशांति का वास्तविक मार्ग दिखाते हुए बापूजी बोले : ''जिसके जीवन में परोपकार नहीं है वह लौकिक उन्नति भी नहीं कर सकता, पारलौकिक उन्नति का तो नाम ही मत लो।''

४ (शाम) से ६ सितम्बर तक **गुड़गाँव (हरि.)** में पूनम-दर्शन एवं सत्संग का आयोजन हुआ। पूज्यश्री ने कहा : ''विश्वशांति का ढिंढोरा पीटनेवालों को हम प्रार्थना करते हैं कि आत्मशांति के बिना विश्वशांति होना कभी सम्भव ही नहीं है। आप परमात्मप्राप्ति का उद्देश्य बना लीजिये। ईश्वर-प्राप्ति के उद्देश्य से सारे दुर्गुण दूर करने की कला आपमें जागृत हो जायेगी व विश्वशांति का राजमार्ग मिल जायेगा।''

६ (शाम) व ७ सितम्बर को **दौसा (राज.)** के श्रद्धालुओं की दीर्घकालीन प्रार्थना फलीभूत हुई और उन्हें पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग का लाभ मिला। **९ सितम्बर** को **विरमगाम, सुरेन्द्रनगर व लिंबड़ी (गुज.)** के श्रद्धालु भक्तों को पूज्यश्री के सत्संग का एक-एक सत्र प्राप्त हुआ। **१० सितम्बर** को बापूजी **जामनगर (गुज.)** पहुँचे । १९ साल बाद पूज्यश्री का सत्संग पाकर जामनगर की जनता में एक अनूठा उत्साह देखने को मिला । मात्र १ सत्र के इस कार्यक्रम को लोगों ने अपने जीवन के अमूल्य क्षणों में परिवर्तित कर लिया।

११ से १३ सितम्बर तक **राजकोट (गुज.)** के भव्य सत्संग-आयोजन में राजकोट व आसपास के लोग बड़ी संख्या में उमड़े और इस सत्संग को महासत्संग का रूप दे दिया। **१३ सितम्बर (दोपहर)** को राजकोट में सत्संग की पूर्णाहुति कर पूज्यश्री **छाड़वारा, भचाऊ (गुज.)** की सत्संग-प्रेमी जनता में सत्संगामृत बाँटते हुए **गाँधीधाम (गुज.)** पहुँचे। **१३ से १५ सितम्बर** तक **गाँधीधाम** में बही भक्तिधारा में सराबोर हुई यहाँ की जनता।

१८ से २० सितम्बर तक **महाराष्ट्र के संभाजीनगर (औरंगाबाद)** में हुई पूज्यश्री की ज्ञान-भक्ति-योग वर्षा के पूर्व १७ सितम्बर को श्री सुरेशानंदजी के नेतृत्व में सम्पन्न हुई महासंकीर्तन यात्रा में यहाँ की गलियाँ हरिनाममय हो गयीं व सम्पूर्ण वातावरण उत्साह, उमंग और आध्यात्मिकता से भर गया । सत्संग के तीनों दिन उमड़े जनसागर के आगे यहाँ का मैदान छोटा पड़ गया । आत्मसाक्षात्कार-दिवस २० सितम्बर को मंच पर आते ही पूज्यश्री बोले : ''मेरे असली जन्मदिन की मुझे और तुम सभीको मुबारकबादी हो।''

२१ सितम्बर को **रांजणगाँव** व **वालुज (बजाजनगर, महा.)** में नवनिर्मित आश्रमों का उद्घाटन पूज्यश्री के सत्संग-दर्शन से सम्पन्न हुआ । **२१ सितम्बर (शाम) व २२ (दोपहर)** का सत्र **बीड़ (महा.)** निवासियों के नाम

संस्था समाचार

रहा। २२ (शाम) व २३ सितम्बर को प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग **परली वैजनाथ (महा.)** में श्रद्धालुओं को भगवन्नाम-भगवद्‌रस से छलोछल भक्ति-भागीरथी में स्नान करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। **२३ सितम्बर** की रात को **अंबेजोगाई (महा.)** में नवनिर्मित आश्रम का उद्‌घाटन पूज्य बापूजी के पदार्पण से हुआ व उपस्थित लोगों को सहज ही सत्संग-दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भव्य हरिनाम-संकीर्तन यात्रा

पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार-दिवस के उपलक्ष्य में देश के विभिन्न स्थानों के भक्तजन विशाल संकीर्तन यात्राएँ निकालते हैं। २७ सितम्बर को पूज्यश्री के भक्तों द्वारा अमदावाद शहर में निकाली गयी हरिनाम संकीर्तन यात्रा एक अविस्मरणीय 'महासंकीर्तन यात्रा' साबित हुई। डेढ़ किलोमीटर लम्बी इस यात्रा में सबसे आगे १०८ कलश लिये माताएँ-बहनें चल रही थीं। ॐकार की सैकड़ों ध्वजाएँ भक्तजनों द्वारा फहरायी जा रही थीं, जिससे वातावरण में आध्यात्मिक शक्ति की जागृति हो रही थी।

पूज्य बापूजी के श्रीविग्रहवाले रथ को लोग बड़े भाव से खींच रहे थे। यात्रा में अनेक भक्तों के हाथों में उपदेशात्मक सुवाक्योंवाली तख्तियाँ थीं। बाल संस्कार केन्द्र, यज्ञ-हवन महिमा, व्यसनमुक्ति अभियान आदि की मनोरम झाँकियाँ यात्रा की शोभा बढ़ा रही थीं। भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, संतों एवं देवताओं के आकर्षक श्रीचित्रों से तथा गुरु-शिष्य परम्परा, पूज्यश्री का गौ-प्रेम आदि से संबंधित विशाल होर्डिंग्स से अनेक रथ सजाये गये थे। हरिनाम संकीर्तन और भजनों से पूरा माहौल हरिमय हो गया था। मार्ग में लोगों को प्रसाद व सत्साहित्य बाँटा गया।

श्री सुरेशानंदजी इस संकीर्तन यात्रा में पहुँचे व आते ही भजनों से समाँ बाँध दिया। परम पूज्य बापूजी के जयकारों से गलियाँ गूँज उठीं। इस यात्रा में १० हजार से अधिक भक्तों ने भाग लिया। यात्रा जहाँ से गुजरती थी वहाँ के लोग मंत्रमुग्ध होकर देखने लग जाते थे। लोग घरों से बाहर निकलकर यात्रा की आरती करते, मानसिक पूजन करते, पुष्प व अक्षतों की वर्षा से सत्पुरुषों का भावभीना स्वागत करते तथा हरिनाम-संकीर्तन में झूमने लग जाते थे।

लोगों में चर्चा थी कि 'कौन कहता है निंदा होने से बापूजी की छवि धूमिल हुई है ! यह दृश्य देखने से तो लगता है कि गुजरात के भक्तों ने पूज्य बापूजी को पलकों पर बैठा रखा है। भक्त इन्हें प्राणिमात्र के परम हितैषी, परम सुहृद मानते हैं और पूज्यश्री अभी भी लाखों-लाखों, करोड़ों-करोड़ों लोगों की आस्था के केन्द्र बने हुए हैं।' इस संकीर्तन यात्रा की पूर्णाहुति आरती एवं सामूहिक भंडारे से हुई।

पूज्यश्री के आत्मसाक्षात्कार दिवस पर देश-विदेश में निकली संकीर्तन यात्राओं की कुछ झाँकियाँ

अमदावाद

हिम्मतनगर (गुज.)

जयपुर (राज.)

सूरत (गुज.)

पादरा (गुज.)

भोपाल (म.प्र.)

गाजियाबाद (उ.प्र.)

न्यूयॉर्क (यू.एस.ए.)

इलाहाबाद (उ.प्र.)

न्यूजर्सी (यू.एस.ए.)

वर्धा (महा.)

स्थानाभाव के कारण सब झाँकियाँ नहीं दे पा रहे हैं ।

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-42/NW/09-11